म. ग्रं. सं. ठाणे
विषय प्रवास
सं. क्र. ५८५
REFBK-0022521

काश्मीर

टरिस्ट गाईड

१९७०

म. ग्रं. सं. ठाणें.
विषय भू-प्रवास
सं. क्र. ५९५

(All Rights Reserved)

काश्मीर टूरिस्ट गाईड

यात्रियों के लिये एक लाभदायक पुस्तक

(सचित्र व नक्शा सहित)

लेखक

इकबाल सिंह कोहली

First Edition 1970

REFBK-0022521

इकबाल एण्ड को०

अमीरा कदल, लाल चौक

श्रीनगर (काश्मीर)

मूल्य १ ५०

विषय सूचा

कश्मीर का प्राकृतिक सौन्दर्य	३
यात्रियों के लिए कुछ महत्वपूर्ण जानकारी	७
कश्मीर तक का रास्ता	११
श्रीनगर	१७
सैर सपाटे के स्थान	२४
ट्रांसपोर्ट (कश्मीर में यातायात के साधन)	२८
कश्मीर के प्रमुख दर्शनीय तथा स्वास्थ्य वर्धक स्थान	३३
पहलगाँम, गुलमर्ग, सोनामर्ग, यूसमर्ग, अच्छावल और कुकरनाग, मटन, गॉदरबल, अहरबल फाल, वूलर झील, वैरीनाग	
कश्मीर के मौसम और मेवे	४०
कश्मीर का इतिहास	४५
कश्मीर के लोग और उनका रहन सहन	४८
कश्मीर के धार्मिक स्थान	५४
कश्मीर के उद्योग धन्धे और उसकी आर्थिक प्रगति ...	५८
कश्मीर में शिक्षा की प्रगति	६२

कश्मीर का प्राकृतिक सौन्दर्य

कश्मीर अपनी प्राकृतिक सुषमा मे एशिया का स्विटजरलेंड कहलाता है और यदि ध्यानपूर्वक यहाँ की प्रकृति-नदी के पल-पल बदलते रूप-लावण्य माधुर्य, सुकुमारता भव्यता, को कुछ क्षण देखा जाय तो नेत्रो पर जादू-सा चल जाता है, हृदय गदगद और शरीर पुलकित हो जाता है। स्विटजरलेड ससार में प्रसिद्ध है, लेकिन वहाँ का सौंदर्य बनावटी (Man-made) अधिक है जबकि कश्मीर का सौंदर्य नैसर्गिक है। कुदरत ने जिस कारीगरी से, जिस कौशल से कश्मीर प्रदेश सजाया-सवारा है वह कहने से अधिक देखने से सम्बध रखता है। जिसने एक बार यहाँ की सैर की वह बार-बार यहाँ आना चाहता है, मित्रों को भी कश्मीर देखने का सुन्दर मशवरा देता है। भला कौन ऐसा अभागा होगा जो कश्मीर की वादी के दर्शन न करना चाहेगा ? यहां के हिमाच्छादित हौल-शिखर, हरिताभ वनराशि, कल-कल छल-छल का सुरीला नाद उपजाती मस्तानी चाल वाली नदियाँ, झर-झर का अजस्र राग अलापने झरने, हिमकणों के सुनहले-रूपहले मोतियों को गोदी में भरे हरे-हरे

घास के मैदान, पर्वतों का प्रात एव सध्या की वेला मे गुलाल और अबीर को बार-बार बडे हाव-भाव से, विचित्र भगिमा से अपने मुख पर मलकर सभी के लिए चित्ताकर्षक रूप प्रस्तुत करना, सेब, अनार, अँगूर, खूबानी, नाशपाती, चेरी से लदी डालिया, बादामों पर मनभाए शगूफे, झीलों में तरगों का विलास भरा नृत्य, गगन के कानों में कुछ भेद की बात कहते देवदार और चीड के वृक्ष, सैकडों वर्षों के गत इतिहास का स्वप्न देखते चिनार के विशालाभर वृक्ष, अप्रतिम, अद्वितीय रूप के नशे को साथ लिए कश्मीरी युवतियाँ, उनकी अद्भुत और विलक्षण वेशभूप , यहाँ की फूलो से भरी क्यारिया, सरोज-सकुलित सरोवर, लकडी, नमदा, शाल, पेपरमशी की दस्तकारी—ऐसा काम बहुमुखी कश्मीर का सौदर्य किसे सहज ही अपनी ओर आकृष्ट न करेगा ? किसके मन में ऐसे छविधाम स्थान के दर्शनों की लालसा उत्पन्न न होगी, किसके नेत्र उसकी सुषमा को देखने के लिए आकुल न होंगे।

कश्मीर का मार्ग—जम्मू से श्रीनगर तक ऐसा आकर्षक और प्राकृतिक सुषमा से अभिमण्डित है कि स्थान-स्थान पर आपकी दृप्टि ठहरती जायगी। हजारों फुट ऊपर चलती बस से आप नीचे बहती चुनाव नदी का अ गडाई भरा प्रवाह देख सकते हैं। कश्मीर की यह पर्वतीय यात्रा इतने मजेदार, आनन्दप्रद, सुखप्रद और मन-मोहक है कि स्थान स्थान पर आप कुछ क्षण रुकना चाहेंगे। उस समय हर वस्तु मानों आपका स्वागत करने के लिए तयार खडी है।'ऊचे ऊचे पहाडों का विराट-रूप आलोकिक सत्ता का रहस्यात्मक ज्ञान प्रदान करता है। यदि कहीं

प्यास लगी तो सूखे पत्थर तुरन्त शीतल जल के स्रोत प्रवाहित करेंगे। इसीलिए तो उर्दू के प्रसिद्ध शायर ब्रजनारायण चकबस्त ने कहा है —

जर्रा जर्रा है मेरे कश्मीर का मेहमा नवाज,
राह मे पत्थर के टुकडों ने दिया पानी मुझे।

कहीं पूरे मार्ग में आपको खाने पीने की कोई किसी प्रकार की असुविधा न होगी।

'जवाहर टनल' को कश्मीर का प्रवेश द्वार (गेटवे ऑफ कश्मीर) समझना चाहिए। पौने दो मील लम्बी और ८,५०० फुट की ऊचाई पर पहाडों को काट कर बनाई गई यह सुरग भारत-जर्मन सद् भावना का अमर प्रतीक है। २२ दिस्मबर, १९५६ को डा० राधाकृष्णन ने उसका उद्घाटन किया था।

इस भव्य सुरग को पार करने के उपरान्त कश्मीर की सुरभ्य वादी में प्रबेश करेंगे। कश्मीर को(वीनस ऑफ दी ईस्ट)भी कहते हैं, यह उसकी बे-जोड सुन्दरता का ही द्योतक है। काजीगुण्ड से आगे बढ़ते ही सफेदे के ऊचे-ऊचे पेड सडक के दोनों किनारों पर खडे वरबद्ध आपका स्वागत करते है। इतने ऊचे, एक दूसरे से बिल्कुल पृथक, बिल्कुल तटस्थ किसी साधन में लीन ये वृक्ष कश्मीर को देवभूमि होने का गौरव भरी प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं। फिर अवन्तिपुर में प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेषों के दर्शन करते हुए पाम्पोर में केसर के खेतों से होकर श्रीनगर पहुचते हैं। कश्मीर केसर के लिए बडा ही प्रसिद्ध हैं। यहा पाम्पोर गाँव के एक निश्चित लघुभूखण्ड में ही केसर उगाई जाती है। अक्तूबर नवम्बर में

केसर के खिले फूलों को चाँदनी रात में देखना असीम सौंदर्य प्रदान करता है ।

श्रीनगर में 'मुगल बाग' यहाँ के दर्शनीय स्थान हैं । जहा चिनार के सुखद 'शीतल छाया' मेवेदार वृक्षों की वहार, नाना रगों के पुष्प, फव्वारों से भरे झरने, हजारों स्त्री-पुरुषों का मेला सभी कुछ देखने योग्य है । यहाँ झील डल के मीलों लम्बे रूप को भी देखा जा सकता है । शिकारे में बैठकर आप झील डल की सैर कर अपने भाग्य की सराहना कर सकते हैं और यहाँ गगन-चुम्बी पर्वतों की नीली सावली परछाई, वर्फ से ढके शिखरों का प्रतिविम्ब भी जल में देख सकते है । इसके अतिरिक्त शकराचार्य और हजरतवल आदि धार्मिक स्थानों पर भी जा सकते हैं । फिर गुलमर्ग और पहलगाम की सैर किये विना कोई कैसे रह सकता है । ये स्थान प्राकृतिक सुषमा की सम्पदा से परिपूर्ण तो है ही साथ मे स्वाथ्यवर्धक भी बहुत है । कश्मीर के सौदर्य का वर्णन कहाँ तक करें, यह तो पृथ्वी पर स्वर्ग ही है—

◆◆◆

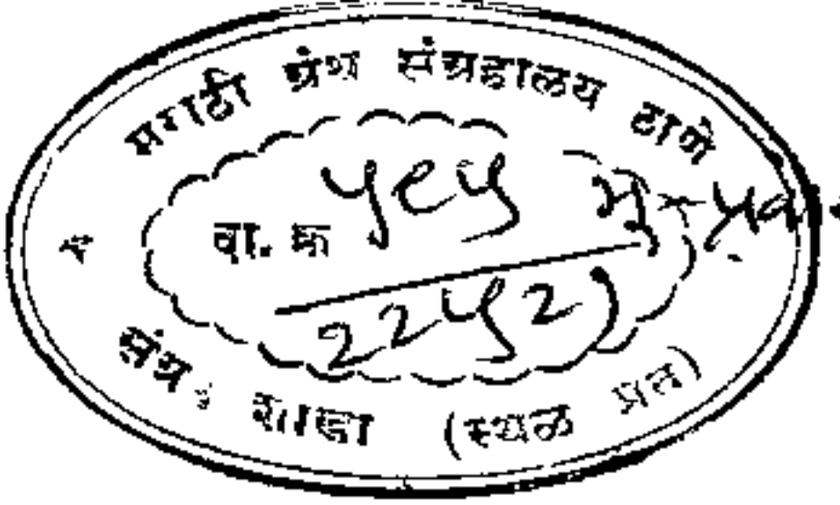

यात्रियों के लिय कुछ महत्वपूर्ण जानकारी

जो यात्री कश्मीर की सैर करने आते है उन्हें जानना चाहिए कि कश्मीर एक पहाडी स्थान है। श्रीनगर एक भव्य नगर है और कश्मीर घाटी की प्रत्येक यात्रा यही से की जाती है। यात्रियों को यहाँ घूमने के लिए कुछ बातें जानना जरूरी हैं —

१ (टूरिस्ट डिपार्टमेंट) पर्यटन विभाग यात्रियों की सुविधा के लिए प्रदेश सरकार ने खोला है इसका मुख्य कार्यालय श्रीनगर में है। प्रत्येक यात्री को चाहिए कि वह इस विभाग से सम्बध स्थापित करे और होटल, हाऊसबोट, डाकबगला शिकारा, यातायात आदि की जानकारी इसी विभाग से प्राप्त करे। श्रीनगर जो यात्री आते है वे (टूरिस्ट रीसेप्शन सेन्टर) आते हैं यह (टूरिस्ट डिपार्टमेंट) का दफ्तर है यहाँ टहरने के लिए कितने ही कमरे और हाल है जो यात्रियो को २४ घण्टे के लिए मिलते हैं और १२ रुपया प्रति कमरा के हिसाब से किराया लिया जाता है और किसी यात्री को होटल वाले, हाऊस बोट वाले, शिकारा वाले आदि किसी व्यक्ति या वहाँ के प्रबन्ध से कोई शिकायत हो तो वह इस विभाग से

सहायता ले सकता है। इस विभाग के अन्य छोटे दफ्तर पहलगाम, गुलमर्ग जम्मू, पठानकोट आदि मुख्य नगरों में भी है।

२ होटल—श्रीनगर में हजारों यात्री आते है। ठहरने के लिए होटल ही मुख्य स्थान है। कभी-कभी तो होटलों में भी स्थान नही मिल पाते। कुछ होटल और उनके फोन नम्बर नीचे दिए गए है —

नाम होटल	टेलीफोन नं०
१ ओबराय पैलेस होटल	२२३१
२ नैडोस होटल	२१२४
३ पार्क होटल	२२३६
४ रीवर व्यू होटल	२४६१
५ मैजेस्टिक होटल	२५०५
६ कुमार होटल	४.६४
७ कश्मीर गेस्ट हाउस	२७६५
८. बुडशाह होटल	६५६६
९. लाला रुख होटल	६५६०
१० बॉम्बे गुजरात होटल	३५६५
११ न्यू महालक्ष्मी होटल	..
१२ ताज होटल	३१५६
१३ कश्मीर खालसा होटल	२७६६
१४ नीलम होटल	५६२६
१५ भारत हिन्दू होटल	३४६८

१६. कश्मीर वैली होटल	...
१७ वेली होटल	...
१८. कपूर होटल	...
१९. विजय होटल	...
२०. ओडियन होटल	२५८३
२१. एम्बेस्सी होटल	६५०७
२२. रिटिज होटल	२ ९८
२३. गैलार्ड होटल	४३१९
२४. क्राउन होटल	२७८३
२५. अशोका होटल	२११५

प्रत्येक होटल में ठहरने और खाने के रेट अलग-अलग होते हैं फिर भी प्रति व्यक्ति रुपये १५.०० प्रतिदिन से अधिक नहीं होते। श्रीनगर में कुछ पश्चिमी ढग के भी होटल हैं जैसे Oberoi Palace और Nedoe's आदि। यहां किराया अधिक होता है।

३ हाऊस बोट— यह भी रहने के लिए होते हैं। बहुत से यात्री यहीं रहना पसन्द करते है। यह हाऊस बोट भी एक प्रकार से होटल के कमरों जैसा ही अन्दर से होता है। यहाँ ठहरने का अपना अलग आनन्द है। हाऊस बोट बडी किश्ती होती है जो नदी या झील में पडी रहती है। यहाँ बहुत से यात्री ठहरते है। वहा खाने का भी अच्छा प्रबन्ध होता है।

डल झील में हाऊस बोट बडी सजधज से एक पक्ति मे खडी हैं यह दृश्य बडा सुन्दर लगता है। प्रत्येक हाउस बोट में ५-७ कमरे होते हैं ब

प्रत्येक मे रेडियो, बिजली और आधुनिक सुविधाए हे। होटलों की भाँति इनके रेट भी अलग-अलग है।

४ कैम्प और बगले—यात्री कैम्प और बगलों में भी रह सकते है। पहलगाम, गुलमर्ग ऐसे ही स्थान हैं जहाँ कैम्प या बगले में ठहरा जाता है। कैम्पों के लिए तम्बू किराए पर मिलते हैं।

५ भोजन-सामग्री—कश्मीर सरकार की ओर से यात्रियों के लिए भोजन की सुविधा का प्रबन्ध है, यहाँ आटा, चावल, चीनी सप्लाई की जाती है। जिन यात्रियों को यह भोजन सामग्री लेनी हो वे टूरिस्ट विभाग से राशन कार्ड बनवा सकते हैं।

६ Arms—हथियार या शस्त्र का लाइसेंस यात्री को कश्मीर राज्य की पहली कस्टम पोस्ट पर दिखलाना पडता है।

७ खरीदारी या शॉपिंग—जो यात्री कश्मीर की सैर करने आते हैं उनकी इच्छा होती है कि वे यहां की कला के कुछ सुन्दर नमूने ले चलें जैसे शाल, पेपरमाशी का सामान, लकडी का सामान, फर की चीजें, पत्थर के हार-कांटे, कालीन आदि। कश्मीर सरकार यात्रियों की सुविधा के लिए गवर्नमेंट सेण्ट्रल मार्केट खोल रखी है। प्रत्येक यात्री को चीजें खरीदते समय अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए और चीजों की कीमत ठीक तय कर लेनी चाहिए।

८ गवर्नमेंट आर्ट एम्पोरियम—यह सरकार की ओर से खोला गया है और यहाँ कश्मीर की बनी सभी चीजे मिलती हैं और मूल्य भी ठीक ही होता है।

कश्मीर तक का रास्ता

(Route to Kashmir)

जो यात्री कश्मीर की सैर करना चाहते हैं उनके लिए दो मार्ग हैं एक हवाई जहाज द्वारा दूसरा सडक द्वारा ।

By air —

विमान द्वारा कश्मीर पहुचने के लिए देहली से I A C की सेवाएँ उपलब्ध हैं । देहली से सीधे श्रीनगर के लिए जहाज में २ घन्टे लगते हैं । और इसके अतिरिक्त चन्डीगढ़, अमृतसर, जम्मू से होकर भी श्री नगर पहुचते है । विमान से यात्रा लाभदायक और शीघ्र होती है । जिन यात्रियों के पास समय कम होता हैं वह विमान द्वारा यात्रा करते है ।

२ सडक का रास्ता (By road) कश्मीर एक पहाडी प्रदेश है और उसका रास्ता भी पहाडों पर होकर जाता है इसलिए यहा रेल नहीं है । रेल तो सिर्फ पठानकोट तक जाती है उसके आगे जम्मू और फिर कश्मीर तक सफर बस द्वारा ही किया जाता है जम्मू से कश्मीर का पहाडी सफर शुरू होता है जो रास्ते की प्राकृतिक सुन्दरता और मनोहरता के लिए बेजोड है । जिस यात्री को कश्मीर आने का मार्ग ज्ञात न हो वह दिल्ली आकर पठानकोट के लिए रेलगाडी पकडे । पठानकोट और दिल्ली के बीच कई-एक रेलगाडियाँ चलती है जैसे कि कश्मीर मेल, श्रीनगर एक्सप्रैस । रेलगाडी की यात्रा के लिए रियायती और वापसी टिकटें (Concessianal Return Journey Tickets)भी मिलती है ।

भारतीय रेलवे के द्वारा कश्मीर की सैर के लिए बहुत सुविधाऐं दी गई हैं । प्रत्येक स्टेशन से कश्मीर की यात्रा के लिए कम किराये पर

वापसी टिकटें मिलती है यह वापसी टिकट भी १।। टिकटके आधार पर मिलते है जैसे दिल्ली से पठानकोट का किराया Rs १५ ५० है तो वापसी टिकट कुल Rs २३ ५० का मिलेगा। यह टिकटें सीजनल (seasonal), होती है और अप्रेल से अक्तूबर तक मिल सकती हैं जो तीन महीने तक इस्तेमाल की जा सकती हैं।

पर्मिट (Permit System) कश्मीर आने के लिए अब किसी प्रकार पर्मि की जरूरत नही। यह १९५४ मे खत्म हो गया है।

कश्मीर की यात्रा के लिए रेल का आखरी स्टेशन पठानकोट आता है। यह पजाब का एक नगर है और सैनिक छावनी है। जम्मू कश्मीर सरकार ने यहाँ एक टूरिस्ट आफिस (Tourist office) खोल रखा है जो यात्रियों को हर प्रकार की जानकारी देता है। बसे पठानकोट से श्रीनगर (कश्मीर) के लिए सीधी (Direct) मिलती है ये बसे तीन कम्पनियाँ चलती है —

1. J. & K Govt. Transport.
2 Kashmir Tourist Bus service.
3 N D Radha Krishen & co.

ये कम्पनियाँ भी कम मूल्य पर रियायती वापसी टिकटें देती है। ये टिकटें तीन महीने के लिए होती है। वापसी के लिए ३ दिन पहले कम्पनी को सूचना दी जाती है। टिकटों की दर इस समय ये है।

पठानकोट से श्रीनगर Rs २२ प्रति व्यक्ति एक तरफ का
" " Rs ३१ ५० " वापसी टिकट

पठानकोट से श्री नगर २६७ मील है। बसों के अतिरिक्त कारों जीपो, टैक्सी, स्टेशन वैगन और स्कूटर से भी मार्ग तय किया जा सकता है।

टैक्सी, कार, स्टेशन वेगन एक दिन में श्रीनगर पहुचा देते है जबकि बसों के द्वारा १॥ दिन लगता है पठानकोट से यात्रा का आरम्भ प्रात: ८ बजे होता है—

जम्मू	Arr	१४.००lunch	
जम्मू	Dep	१५ ००	
बटोट	Arr	०७ ००	Night stay at Dak Banglow
बटोट	Dep.	०७.००	दूसरे दिन
काजी गुण्ड		१३ ००	Lunch
श्रीनगर	Arr.	१५.००	

अगर कोई यात्री १ १/२ दिन की यात्रा पसद न करे तो उसे चाहिए वह पठानकोट से जम्मू आकर रात में ठहरे और जम्मू से प्रात बस द्वारा यात्रा कर शाम को श्रीनगर पहुचे। जम्मू से श्रीनगर के लिए ए. क्लास और बी क्लास दो प्रकार की बसे चलती हैं। ए क्लास की बसें कुछ अधिक किराया लेती है। किसी व्यक्ति को सीटों का रिजर्वेशन कराना हो तो वह मैनेजर, जे. एण्ड के. गवर्नमेंट ट्रांसपोर्ट, पठानकोट या जम्मू के साथ सम्पर्क स्थापित करे। इस प्रकार के रिजर्वेशन के लिए १५% एडवांस में देना होता है। यहाँ यह भी याद रखना जरूरी है कि ३ साल से अधिक बच्चों की टिकट पूरी लगती है।

पठानकोट से राष्ट्रीय मार्ग (नेशनल हाईवे) शुरू होता है। यह मार्ग पठानकोट से उडी तक जाता है जिसकी कुल लम्बाई ३३६ मील है और इसके तीन भाग हैं। पहला पठानकोट से जम्मू तक ६७ मील, दूसरा जम्मू से श्रीनगर २०३ मील, तीसरा श्रीनगर से उडी तक ६७ मील लम्बा है।

पठानकोट से जम्मू तक का मार्ग प्लेन है और उस पर तीन बडे लम्बे पुल हैं, इसके अतिरिक्त सडक १८-२० बरसाती नाले भी पार करती है। पठानकोट से ११ मील दूर लखनपुर आता है जहा पजाब और जम्मू-कश्मीर राज्य की सीमाए मिलती हैं। यहाँ कस्टम विभाग का एक दफ्तर है। सभी बसे यहाँ कुछ देर ठहरती है और इससे आगे ३० मील की दूरी पर सर सम्बा आता है। मार्ग समतल और अच्छा है।

पठानकोट से ६७ मील दूर जम्मू आता है। यह नगर जम्मू-कश्मीर राज्य की सर्दियो की राजधानी है।

जम्मू नगर 'मन्दिरो का नगर' कहा जाता है, क्योंकि यहाँ मन्दिर अधिक है। रघुनाथ मदिर नगर के बीच में है। यह मन्दिर देखने योग्य है। जम्मू मे टूरिस्ट डिपार्टमेट का एक अफसर रहता है जो यात्रियों को तरह-तरह की जानकारी देता है। यहा डाक बगला और बहुत से होटल हैं।

उधमपुर —जम्मू से ६५ मील की दूर पर उधमपुर आता है यह छोटा सुन्दर नगर है जो एक पहाडी पर स्थित है। यहाँ फौजी छावनी

भी है। भारतीय सेना के लिए यह नगर बहुत महत्वपूर्ण है यहाँ पर भी एक 'डाक बगला' है।

कुद —उधमपुर से २० मील पर कुद नाम का छोटा स्थान आता है यहा ४-५ होटल हैं। यहाँ कुछ चाय आदि खा-पीकर आगे चलते हैं। यह जगह पहाडी पर है इसलिए यहाँ हर समय सर्दी रहती है। कुद से नीचे देखने पर 'चन्हनी का बिजली घर' भी देखा जा सकता है। यह राज्य का एक बडा बिजली घर है। कुद से ४ मील दूर आगे आने पर पटनी-टाप आता है, यह स्थान समुद्र तल से ६५४७ फुट की ऊँचाई पर स्थित है। इसी स्थान से एक रास्ता 'सनासर झील' को जाता है।

बटोत—यह स्थान कुद से १२ मील है और समुद्रतल से ५१७० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। यह पहाडी पर है और उसकी तुलना मन्सूरी (U. P) से की जा सकती है। यहाँ की जलवायु ठण्डी स्वास्थ्य वर्धक है इसलिए यह एक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ यात्री रात में विश्राम भी करते हैं। यहा होटल, डाक बगला, डाक-तार का दफ्तर, पेट्रोल पम्प और कुछ दुकाने है। यही चुनाव नदी देखने को मिलती है। आगे काजी कुण्ड तक का सब मार्ग पहाडी है।

एक पहाडी समाप्त होती है तो दूसरी शुरू हो जाती है। गर्मियों मे दूर पहाडों पर बर्फ भी देखने को मिलती है।

रामबन —बटोत से १७ मील दूर एक गर्म स्थान है। यहा पर सब सडक चुनाब नदी के साथ साथ चलती है। यह नदी बहुत तेज बहती है।

बनिहाल —एक छोटा स्थान है जो कश्मीर के प्रसिद्ध पहाड पीर-पजाल के पूर्व में स्थित है। यह समुद्रतल से ५,५० फुट ऊँचा है। यहाँ एक डाक बगला और, कुछ खाने-पीने की दुकानें है।

जवाहर टनल (Jawahar Tunnel) —बनिहाल से आगे पीर-पजाव पहाड को काटकर दो किलोमीटर लम्बी 'जवाहर टनल' बनाई गई है। यह सुरग २२ दिसम्बर १९५४ को उस समय के राष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने ट्रेफिक के लिए खोली। इस सुरग से कई लाभ हुए। एक तो जम्मू श्रीनगर का रास्ता १८ मील कम हो गया, दूसरे इसके बनवाने से अब यह रास्ता वर्षा में भी खुला रहता है। साथ-साथ दो सुरग हैं एक आने के लिए। दूसरी जाने के लिए। यहाँ सर्दी बहुत ज्यादा होती है।

काजीकुण्ड—सुरग पार कर पहाडों से नीचे आने पर काजीगुण्ड का स्थान आता है यह समतल मैदान में है और कश्मीरवादी यही से आरम्भ होती। यहाँ से श्रीनगर ४४ मील दूर है। आगे श्रीनगर तक का मार्ग बिल्कुल समतल है। काजीगुण्ड ५६६७ फुट ऊचा है।]

खन्नाबल—यह स्थान काजीगुण्ड से केवल ११ मील दूर है इसी मार्ग से अनतनाग और पहलगाम को सडकें जाती है।

अवन्तिपुर—यह स्थान श्रीनगर के रास्ते मे झेलम नदी के किनारे स्थित है। यहाँ कौरव-पाण्डवों के मदिरों के भग्नावशेष हैं। यहाँ मुसलमानों की एक सुन्दर मस्जिद भी है।

पाम्पोर —यह स्थान श्रीनगर से ८ मील दूर है। यहाँ केसर पैदा होती है इसीलिए ससार में प्रसिद्ध है।

श्रीनगर टूरिस्ट सेण्टर बस पहुचने पर यात्री होटल या किसी हाउसबोट में ठहरने का आसानी से प्रबन्ध कर सकते हैं।

श्रीनगर

श्रीनगर कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी है। यह नगर समुद्रतल से ५,२०० फुट ऊँचा है। इसकी कुल लम्बाई ८ मील और चौडाई ४ मील है। यह नगर झेलम नदी के दोनों किनारो पर बसा है। उसकी कुल जनसख्या लगभग ४ लाख है और सभी धर्मों सम्प्रदायों के मानने वाले यहाँ रहते है। यह बागो, मस्जिदों-मन्दिरों, पुलो का नगर कहलाता है। यहाँ के लोग आर्य नस्ल के सुन्दर लोग है और नगर भी अच्छा है। झेलम नदी से इस नगर की भी सुन्दरता अधिक बढ़ गई है।

शकराचार्य का मन्दिर Shankaracharrya Temple यह श्रीनगर का एक प्रसिद्ध मन्दिर है और मुख्य सडक के पास एक ऊची पहाडी पर बनाया गया है। ऊपर चढ़ कर शिव मन्दिर है, वहाँ से होटल, डल झील, और श्रीनगर के सभी स्थान दिखाई पडते है, मानो सारा नगर शिव के चरणों में पडा हुआ है। नेहरू पार्क से मन्दिर तक सडक बनाई जा रही है।

झेलम नदी के दस पुल—श्रीनगर को किश्ती और पुलों का नगर कहते है। श्रीनगर मे झेलम नदी पर नए-पुराने दस बडे पुल हैं। ये पुल सामान्य जीवन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। पुलों के नाम ये हैं—

१ अमीरा कदल ।

२. बडशा ब्रिज ।

३ हब्बा कदल ।

४. फतेह कदल ।

५. जैना कदल ।

६ अली कदल ।

७ नवा कदल ।

८ सफा कदल ।

९ जीरो ब्रिज ।

१० छत्ताबल वियर ।

न० २, ९, १० पुल नए बनाए गए है। अमीरा कदल का पुल बहुत महत्वपूर्ण है। जीरो ब्रिज से अमीरा कदल तक झेलम नदी में दोनों किनारों पर अनेक सुन्दर हाऊसबोट पडे है। झेलम नदी के इसी किनारे को 'बण्ड' कहते है। यहाँ गर्मियों मे अत्यधिक चहल-पहल होती है। सारा मार्ग चिनार के वृक्षों से भरा है और सडक के साथ-साथ कश्मीरी कला की सुन्दर दुकानें भी बहुत-सी हैं।

मुगल बाग —श्रीनगर के मुगल बाग ससार मे प्रसिद्ध है। अगर इन्हें श्रीनगर का हृदय कहा जाए तो कोई बुरा नही। सारे बाग बुलिवर्ड रोड पर स्थित हैं।

नेहरू पार्क'—यह श्रीनगर से तीन मील दूर है। डल झील के बीच मे टापू की शक्ल का एक छोटा सा पार्क है यहा पहुचने के लिए शिकारे पर बैठकर जाना पडता है। इस पार्क में एक जलपानगृह भी है। शाम को बिजली के कुमकुमों से जब सारा डल जगमगाता है तो इस पार्क की सुन्दरता देखते ही बनती है।

चश्मे शाही'—यह सुन्दर बाग एक छोटी पहाडी पर बना हुआ है जो श्रीनगर से ५॥ मील दूर स्थित है। यहाँ पहुचने के लिए बोलर्ड रोड से एक छोटी १॥ मील लम्बी सडक जाती है। यह बाग शाहजहाँ ने बनवाया था। यहाँ शान्त वातावरण है। यहाँ एक ठण्डे पानी का चश्मा है जिसका पानी स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हैं। पानी इतना शीतल होता है कि दो गिलास भी मुश्किल से पिए जा सकते है। जहाँ नानाप्रकार के सुन्दर-सुन्दर फूल खिले है। यहाँ सरकार की ओर से छोटे-छोटे हट भी बने हैं जहाँ यात्री ठहर सकते हैं। इसके पास ही 'गवर्नर-भवन' और श्रीनगर दुग्ध स्कीम की डेरी है। इस बाग को 'प्रेम का बाग' भी कहते हैं।

निशात बाग —चश्मेशाही से २॥ मील की दूरी पर सडक के किनारे निशात बाग आता है। यह झील डल के किनारे बना है। यह बाग पहाडी तराई में स्थित दस भागो मे बटा हुआ है। इसकी बनावट सीढी-दार है जो ऊपर ही ऊपर होता चला जाता है। यह नूरजहाँ के भाई आसफ जहाँ की याद दिलाता है। श्रीनगर से ८ मील दूर यह बाग बडा सुन्दर और आकर्षक है। बाग के बीच से होकर एक पानी की धारा

बहती है जिसमें अनेक फव्वारे लगे हैं। हर इतवार को यहाँ फव्वारे खोले जाते हैं और यात्री असख्य मात्रा में घूमने आते है। स्त्री-पुरुषों की चहल पहल से इसकी रौनक दोबाला हो जाती है। बहुत से फलदार वृक्ष, फूलो से भरी क्यारियाँ, मखमली घास की हरियाली, चिनारों के बहुत विशाल वृक्ष इस बाग की शोभा बढ़ाते हैं यहाँ एक रेस्टोरेन्ट भी है।

शालीमार बाग —यह बाग निशात की तरह झील डल के किनारे तो नही, लेकिन अपने सौदर्य मे कम नहीं। श्रीनगर से १० मील दूर यह बाग जहाँगीर और नूरजहाँ की प्रेम कहानी की याद ताजा करता है। यह सबसे बडा बाग है जहाँ बहुत से फव्वारे लगे है और प्रत्येक रविवार को खोले जाते हैं। यह भी फलों और फूलों से भरा रहता है। यह जहा-गीर बादशाह द्वारा बनवाया गया था। भले ही जहाँगीर और नूरजहाँ यहाँ नही, लेकिन उनकी प्रेमकहानी को यह बाग आज तक अमर रखे है।

हार्वन—हार्वन बाग भी है और झील भी। यह श्रीनगर से १२ मील दूर सडक पर स्थित है। यहाँ पानी के शीतल स्रोत बहते है और चिनार के वृक्षो से घिरा यह बाग शाँत वातावरण प्रदान करता है। यहाँ पानी की एक बडी झील है। इसी झील से श्रीनगर को पीने का पानी मिलता है।

डल झील —यह कश्मीर की सबसे सुन्दर झील है जो ४ मील लँबी और २॥ मील चौड़ी है। यह अगाध पानी की झील श्रीनगर से केवल २

मील दूर है इसे झेलम नदी के साथ छोटे नालों से भी मिलाया गया है जिससे शिकारे और हाऊस बोट नदी से होकर झील में आ सकें। इसी झील के किनारे मुगल बाग, नेहरू पार्क, चारचिनार हैं। चार-चिनार झील के बीच में स्थित है। झील के किनारे पक्की सडक जाती है। यह घूमने और देखने योग्य एक सुन्दर स्थान है। झील की सैर शिकारे से आनन्द-दायक होती है। इस झील का पानी गर्मियों में गर्म हो जाता है लेकिन जाडे के दिनों मे यह जम भी जाता है। झील के दो भाग हैं, एक बडी झील दूसरी छोटी झील। बडी झील मुगल बाग की तरफ है और छोटी डल हजरतबल की तरफ। झील का पानी स्वच्छ और निर्मल है, यहा बहुत से लोग तैराकी(स्वीमिंग) भी करते है। इसमें (सर्फ राइडिंग वाटर पोल, फिसिंग स्वीमिग) खेल भी खेले जाते है। इसके किनारे सैर करना आनदप्रद और स्वास्थ्यप्रद है।

चार चिनार.—इस बाग मे चार चिनार के पेड है। यह नेहरू पार्क की भाँति एक टापू है लेकिन छोटा है और बडे डल के बीच मे है। सर-कार ने इस स्थान को और सुन्दर बना दिया है। यहाँ एक छोटा रेस्टो-रेन्ट भी है। यात्रियों को यहाँ शिकारे मे बैठ कर आना पडता है, सडक से नही।

नसीम बाग —इस बाग को नसीम झील भी कहते है। यह हजरत-बल के पास और श्रीनगर से ७ मील दूर है। यहां शाँति रहती है। यहाँ कैम्प या हाऊसबोट में रह सकते है। चिनारों के विशाल वृक्षो से इस बाग की शोभा है। यहीं पर इन्जीनियरिंग कालेज भी है।

हरी पर्वत—श्रीनगर से ४ चार मील दूर यह एक छोटी पहाडी है जहाँ शारिका का मदिर है और अकबर बादशाह का एक पुराना किला है जो ऐतिहासिक महत्व रखता है। इस पर्वत के एक ओर मुसलमानों की बडी जियारतगाह है।

श्रीनगर के कुछ प्रमुख स्थान —श्रीनगर भारत मे एक अद्भुत नगर है यहाँ चारों ओर पहाड है। यहाँ कुछ देखने योग्य स्थान ये हैं—

१ कश्मीर आर्ट एम्पोरियम—यह एक सरकारी सस्थान है जहाँ कश्मीर की कला की सुन्दर वस्तुयें मिलती है।

२ गवर्नमेंट कन्ट्रोल मार्केट—यह मार्केट कश्मीर सरकार की ओर से यात्रियों के लिए खोला गया है मार्केट मे बहुत सी दूकाने है और जहाँ वस्तुओं के दाम लगभग एक ही होते हैं।

३ अजायबघर (म्यूजियम) —यह सस्थान झेलम नदी के किनारे है है जहाँ कश्मीर की कला के अतिरिक्त पुराने जमाने की बहुत सी चीजें रखी गई हैं। इसका भी ऐतिहासिक महत्व है और यात्री को इसे अवश्य देखना चाहिए।

४ गवर्नमेंट सिल्क फैक्ट्री —यह राजबाग (श्रीनगर) में सिल्क का सरकारी कारखाना है। यहाँ वस्त्रो के बेचने का भी एक भाग है।

५ रेशम खाना —यह सस्थान रेशम का धागा तैयार करता है और भारत मे यह रेशम खाना प्रसिद्ध है।

इसके अतिरिक्त श्रीनगर मे और भी कई सस्थान हैं।

बैंक—श्रीनगर एक व्यापारिक नगर भी है इसलिए यहाँ कई एक

बैंक हैं जो यात्रियो की सेवा के लिए तैयार रहते है। इन बैंकों में ये बैंक है—

१ स्टेट बैंक आफ इण्डिया।
२. पजाब नेशनल बैंक।
३. यूनाइटेड कमर्शियल बैंक।
४. लक्ष्मी कामर्शियल बैंक।
५. जम्मू, कश्मीर बैंक।
६. बैंक आफ बडौदा।
७ नेशनल बैंक आफ लाहौर।
८. लायडज बैंक (लन्डन)।

सिनेमा —सिनेमा मनोरजन का सबसे बडा साधन है। श्रीनगर में कई सुन्दर पिक्चर हाल है जहाँ हिन्दी अँग्रेजी फिल्में दिखाई जाती है। कुछ सिनमा हाल ये है—

१ पैलेडियम (लाल चौक)
२. रीगल (रेजीडेन्सी रोड)
३. ब्रोडवे (वटवारा)
४ नीलम (करम नगर)
५. नाज।
६ शीराज (खानयर)
७ खयाम (नानपुरा)
८ फिरदौस (हावाल)।

सैर सपाटे के स्थान

साइट सीइग स्थान विशेष की यात्रा-भ्रमण को कहते हैं। कश्मीर की ८० मील लम्बी, २०-२५ मील चौडी घाटी में अनेक सुन्दर देखने योग्य स्थान हैं। यात्री के पास इतना समय नहीं होता कि वह सभी स्थानों के दर्शन कर सके। कम समय में अधिक से अधिक स्थानों के दर्शन कराने के लिए सरकार की ओर से 'Sight Seeing' यात्रा शरू की गई है। इस यात्रा के द्वारा यात्री एक ही दिन मे श्रीनगर से बाहर पहल गाम तक की यात्रा कर सकते है। पाम्पोर अवन्तिपुरा, विज विहारा, अच्छाबल, कुकरनाग, अनत नाग, मटन आदि का भ्रमण एक ही चक्कर मे पूरा हो जाता है। यात्री प्रात श्रीनगर से बस द्वारा चल कर शाम को वापस आ जाते हैं। यात्री को इसके लिए अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। श्रीनगर से ये यात्राये की जाती है —

१ श्रीनगर से गुलमर्ग।

२ श्रीनगर से पहलगाम via अच्छाबल-कुकरनाग।

३ श्रीनगर से सोनामर्ग।

४ श्रीनगर से युसमर्ग।

५. श्रीनगर से राउण्ड दी वूल लैक (Round the Wullar Lake) ।

श्रीनगर से गुलमर्ग —गुलमर्ग एक छोटा सा लेकिन महत्वपूर्ण और दर्शनीय स्थान है जो अपनी सुन्दरता में सस र में प्रसिद्ध है। यह स्थान श्रीनगर से २८ मील दूर है और समुद्र तल से ८५०० फुट ऊँचा है। पहले गुलमर्ग तक सडक नही जाती थी लेकिन आज गुलमर्ग तक सडक जाती है। रास्ते में मागाम और टनमर्ग स्थान आते है। टनमर्ग के ऊपर पहाडी पर गुलमर्ग स्थित है। टनमर्ग में Tourist office भी है। यदि कोई यात्री घोडे से गुलमर्ग जाना चाहे तो वह टनमर्ग से घोडे पर जा सकता है। गुलमर्ग मे Hotels और Huts यात्रियों की सुविधा के लिए बनाए गए हैं। यहाँ Cosmic Rays की प्रसिद्ध Observatory भी है।

गुलमर्ग से ३॥ मील खिलनमर्ग नाँमक स्थान है। जो गुलमर्ग जाते है वे खिलनमर्ग भी देखते हैं। वहां पूरे वर्ष वर्फ पडी रहती है। एक दिन में यात्री गुलमर्ग और खिलनमर्ग देखकर शाम को श्रीनगर वापस आ सकता है।

श्रीनगर से पहलगाम —यह यात्रा कुछ लम्बी है फिर भी एक दिन में हो जाती है। श्रीनगर से पहलगाम ६० मील दूर है। रास्ते मे पम्पोर अवन्तिपुरा, अनत नाग, मटन आदि स्थान आते है। अच्छावल और कुकरनाग को देखकर फिर पहलगाम जाते है और दो घटे पहलगाम आराम करने के बाद शाम को श्रीनगर वापस आ जाते है। श्रीनगर से खन्तागल तक तो राष्ट्रीय मार्ग है, यहाँ से सडक अनतनाग होती हुई पहलगाम जाती है। अनतनाग मे एक मन्दिर है जहाँ सुन्दर चश्मा भी

है। अनतनाग से ५ मील दूर मटन जी का मन्दिर है। वसे यहा कुछ देर ठहरती हैं। आगे चलकर सडक लिदर नदी के साथ-साथ चढती जाती है। लिदर नदी का पानी बहुत साफ है उसका प्रवाह वडा तेज है पहलगाम के ऊँचे ऊँचे पहाड, नदी आदि को २-३ घटों में नहीं देखा जा सकता।

श्रीनगर मे कुछ बसे यात्रियों को अच्छावल और कुकरनाग दिखाती पहलगाम ले जाती है और रात को वापस आ जाती है।

श्रीनगर से सोनामर्ग —यह यात्रा भी एक दिन मे हो जाती है। श्रीनगर से सोनामर्ग जाते हुए रास्ते में कगन आदि छोटे गाव आते है। सोनामर्ग का सौदर्य गुलमर्ग जैसा आकर्षक है। यह श्रीनगर मे ५६ मील दूर ऊँचे ऊँचे पहाडों मे स्थित है। यहाँ वर्ष भर वर्फ पडी रहती है। पानी का नाला, ग्लेशियर यहाँ के मुख्य आकर्षक है। यहाँ नवम्बर मे ही बर्फ पड जाती है। साइट सीइग के लिए बसें श्रीनगर से ८ बजे जाती है और ३ घटे सोनामर्ग मे रुकने पर शाम को वापस श्रीनगर आ जाती है।

श्रीनगर से युसमर्ग (Srinagar to Yusmarg) —कुछ वर्षों से यात्रियों के लिए युसमर्ग एक नया आकर्षण का केन्द्र बन गया है। यह श्रीनगर से २६ मील दूर है। युसमर्ग के रास्ते मे ही मुसलमानो की जियारतगाह चिरार शरीफ आती है। यहाँ एक प्रसिद्ध भव्य मस्जिद है युसमर्ग कश्मीर के सबसे वडे पहाड पीर पजाल के दामन मे स्थित है और प्राकृतिक सौदर्य में अनोखा है। यहाँ बर्फ से ढके पहाड, चीड के

ऊँचे-ऊँचे पेड, झरनों का साफ शीतल पानी मोहक है। गुलमर्ग कुछ घंटे घूम फिर कर शामको यात्री श्रीनगर आ जाते हैं। एक दिन में यह यात्रा अच्छी प्रकार से हो जाती है।

श्रीनगर से वूलर—एक ही दिन में कश्मीर के सुन्दर स्थानों का भ्रमण कर एशिया की प्रसिद्ध झील वूलर के चारों ओर बस द्वारा भ्रमण कर शाम को वापस श्रीनगर आ सकते है। यह झील देखने योग्य है, उसका पानी नीले रंग का स्वच्छ पानी है। उसकी कुल लम्बाई १२ और चौडाई ५ मील है। श्रीनगर से बसें सुबह चलती है और गान्दरबल, खीर भवानी, मानसबल झील, बाडी पुर वूलर से होती हुई सोपोर जाती हैं और फिर वापस श्रीनगर आ जाती है। वटलन नामक स्थान से झील अधिक सुन्दर लगती है यहाँ रेस्ट हाऊस भी बना हुआ है जहाँ यात्री दोपहर को भोजन करते हैं और दो घंटे आराम भी करते हैं।

सर्व श्रेष्ठ सुविधा के लिये ठहरिये
भारत हिंदू होटल
(बार एण्ड रैस्टोरेन्ट)
अमीरा कदल, लाल चौक—श्रीनगर फोन न० ३५९८

ट्रांस्पोर्ट

कश्मीर घाटी में यातायात के साधन

जो यात्री कश्मीर की सैर करने के लिए आते है उनके लिए यातायात के साधनों के विषय मे जानकारी रखना अति आवश्यक है। कश्मीर घाटी मे श्रीनगर के अतिरिक्त और बहुत से स्थान है जिनको प्रत्येक यात्री देखना पसन्द करेगा और वहाँ आने जाने के लिए सडकें अधिक योग देती हैं। यहा कश्मीर घाटी के प्रमुख यातायात के साधनों का वर्णन है —

१. हवाई जहाज
२ बसें
३ टैक्सी
४ टागे
५ प्राईवेट कारें
६. शिकारा

हवाई जहाज से —हवाई जहाज के द्वारा केवल दिल्ली से श्रीनगर या जम्मू से शाबिवार पहुचा जा सकता है। जिन यात्रियों के पास समय कम होता है, इस साधन के द्वारा उसका अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सकता है। हवाई जहाज से श्रीनगर आने पर खर्च अधिक होता है लेकिन यात्रा आरामदायक और शीघ्र तय हो जाती है। उच्च श्रेणी के लोग ही इसका प्रयोग अधिक करते है। दिल्ली और जम्मू से

प्रतिदिन श्रीनगर आने के लिए इण्डियन एयरलाईनस कारपोरेशन की सेवाए होती है और जानकारी के लिए इण्डियन एयरलाईनस के दफ्तर से सम्पर्क रखें।

By Bus —बसों के द्वारा कश्मीर की घाटी की सैर बसो से ही की जाती है। यही यातायात का अधिक सस्ता साधन है और बसें घाटी के प्रमुख स्थानों पर सहज पहुँच जाती हैं और प्रत्येक स्थान को आसानी से देखा जा सकता है। Sight Seeing के लिए बसें एक दिन मे पहलगाम, सोनामर्ग, युसमर्ग और वूलर झील, वैरीनाग तक जाती है और अगर यात्री पूरी बस किराए पर रखना चाहें तो रख सकते हैं।

बसो से यात्रा अच्छी प्रकार से कम खर्च पर पूरी हो जाती है। बहुत से यात्री तो पठानकोट से श्रीनगर तक बसों मे आते हैं। श्रीनगर में भी बसों की कई कम्पनिया है। अत यात्रियों को चाहिए कि वे निम्न कम्पनियो से सम्बन्ध स्थापित करें —

१ गवट ट्रासपोर्ट अडरटेकिग।

२ के एम डी ए ट्रॉसपोर्ट कम्पनी, नीयर बादशाह होटल।

३ भारत ट्राँसपोर्ट कम्पनी।

४. युनाइटड मोटर सरबिस।

कश्मीर घाटी की सैर के लिए गवट. ट्रांसपोर्ट की सिटी सर्विस की बसें भी अधिक यात्री होने पर मिल सकती है।

Tonga (टाँगा) –यह यातायात का प्राचीन साधन है जो श्रीनगर में ही नहीं वरन् सारे देश में प्रचलित हैं। टाँगे के द्वारा श्रीनगर की ही

सैर की जा सकती है। बहुत से यात्री ३-४ मील तक इसी में बैठ कर सैर करते है। कुछ यात्री तो मुगल गार्डन भी टाँगों से जाना पसन्द करते है।

Taxi —टैक्सी कश्मीर घाटी की सैर के लिए सबसे आरामदायक साधन है, लेकिन खर्चा अधिक होता है। लेकिन फिर भी बहुत से यात्री पूरे दिन के लिए टैक्सी किराए पर घूमने के लिए रखते है और श्रीनगर से बाहर जाते है।

Praivate Cars —कारें देश के दूसरे भागों की भाति श्रीनगर में भी बहुत सी प्राइवेट कारे हैं जिनका यात्री उपयोग कर सकते है। जे के गवट. ट्रांसपोर्ट के पास भी बहुत सी कारे है इसलिए यात्री को चाहिए कि वह उससे इस यातायात के साधन के लिए सम्पर्क स्थापित करे। अगर किसी यात्री को कोई परेशानी हो तो उसे टूरिस्ट डिपार्टमेंट की सहायता लेनी चाहिए।

शिकारा —शिकारे से श्रीनगर की नदी झीलों की सैर आनद से की जा सकती है। सैर करने का यह भी एक अच्छा साधन है। जो मनुष्य कश्मीर की सैर करने आता है वह शिकारा मे अवश्य बैठकर सैर करता है। शिकारे से मुगल गार्डन और डल झील की सैर आनददायक होती है। शिकारा छोटी नाव जैसा होता है इसे बडे सुन्दर ढग से सजाया जाता है। नेहरू पार्क और चार चिनार जैसे स्थान शिकारे द्वारा देखे जाते हैं।

Sports —(खेल) कश्मीर प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए ही नहीं

वरन् खेलों के लिए भी विशेष महत्व रखता है जो यात्री कश्मीर की सैर करने आते है वे कई-एक खेल भी खेलते है। वहाँ निम्न खेल खेले जाते है —

गोल्फ —गोल्फ क्लब श्रीनगर में पोलो ग्राउण्ड के पास है जहाँ यात्री क्लब का सदस्य बनकर खेलों में भाग ले सकते हैं। गुलमर्ग मे प्रसिद्ध गोल्फ क्लब है यह ससार मे प्रसिद्ध है। जो सदस्य इस खेल के शौकीन होते है वे गुलमग मे गोल्फ क्लब का सदस्य बन सकते है। पश्चिमी देश के यात्रियो के लिए यह खेल अधिक पसन्द किया जाता है।

Fishing (मछली पकडना) —बहुत से यात्री इस खेल में भी दिलचस्पी रखते है। यह उल्लेखनीय है कि कश्मीर म मछली पकडने की सबसे अधिक झीले हैं। यहा मच्छलिया भी कई प्रकार की होती हैं। जो यात्री मछली पकडने के शौकीन होते है उन्हें फौरेस्ट डिपार्टमेंट से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए और मछली पकडने की आज्ञा प्राप्त करनी चाहिए। मछली पकडने का सामान फौरेस्ट एजेन्सीस मे मिल सकता है कश्मीर ट्रौट मछली के लिए प्रसिद्ध है।

Shooting (शिकार) - कश्मीर के ऊँचे-ऊँचे पर्वत, सघन बन शिकारियों के मन को जल्दी मोह लेते है। इसलिए शिकारी लोग यहाँ शिकार करना जरूर पसद करते है। कश्मीर में शिकार करने योग्य घने जगल भी बहुत अधिक है। यहाँ जगली जानवर भी काफी तादाद में मिलते है, रीछ, हिरन, लोमडी, चीता, मुरगाबी आदि जानवरों का यहा आसानी से शिकार किया जा सकता है। कश्मीर मे शिकार खेलने

के लिए गेम वार्डन से स्वीकृति (परमीशन) लेनी पड़ती है। शिकारियों को टूरिस्ट डिपार्टमेंट से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए।

Sking (स्किंग) —गुलमर्ग मे स्किंग अधिक खेला जाता है। सर्दियों में इस खेल के मुकाबले भी होते हैं। जो व्यक्ति इस खेल के शौकीन होते है उनको चाहिए वे दिसम्बर में कश्मीर की यात्रा करने आए तो स्किंग के लिए गुलमर्ग अवश्य जाए।

Mountaineering (पहाड़ों पर चढ़ना) :—पहाड़ों पर चढना भी एक खेल है। यहाँ छोटे-बड़े अनेक पहाड़ हैं जहाँ यात्री आसानी से चढ़ सकते हैं। पर्वतारोही इस खेल मे बड़ा आनन्द लेते है। जो यात्री पर्वतारोहण करते हैं वे अपने साथ आवश्यक सामान ले जाते हैं।

◆◆◆

जगन नाथ पुरी एण्ड सन्ज़

(थोक व प्रचून विक्रेता) अमीराकदल, लाल चौक
श्रीनगर (काशमीर)

प्रत्येक प्रकार की टोकरियाँ, लकड़ी का सामान, पेपर मैशी, खाल की टोपियां, कोट, दस्ताने, इत्यादि के लिये।

Pahalgam (7,000 ft.)
पहलगाम

Shikara (in Dal Lake)

डल झील में शिकारा

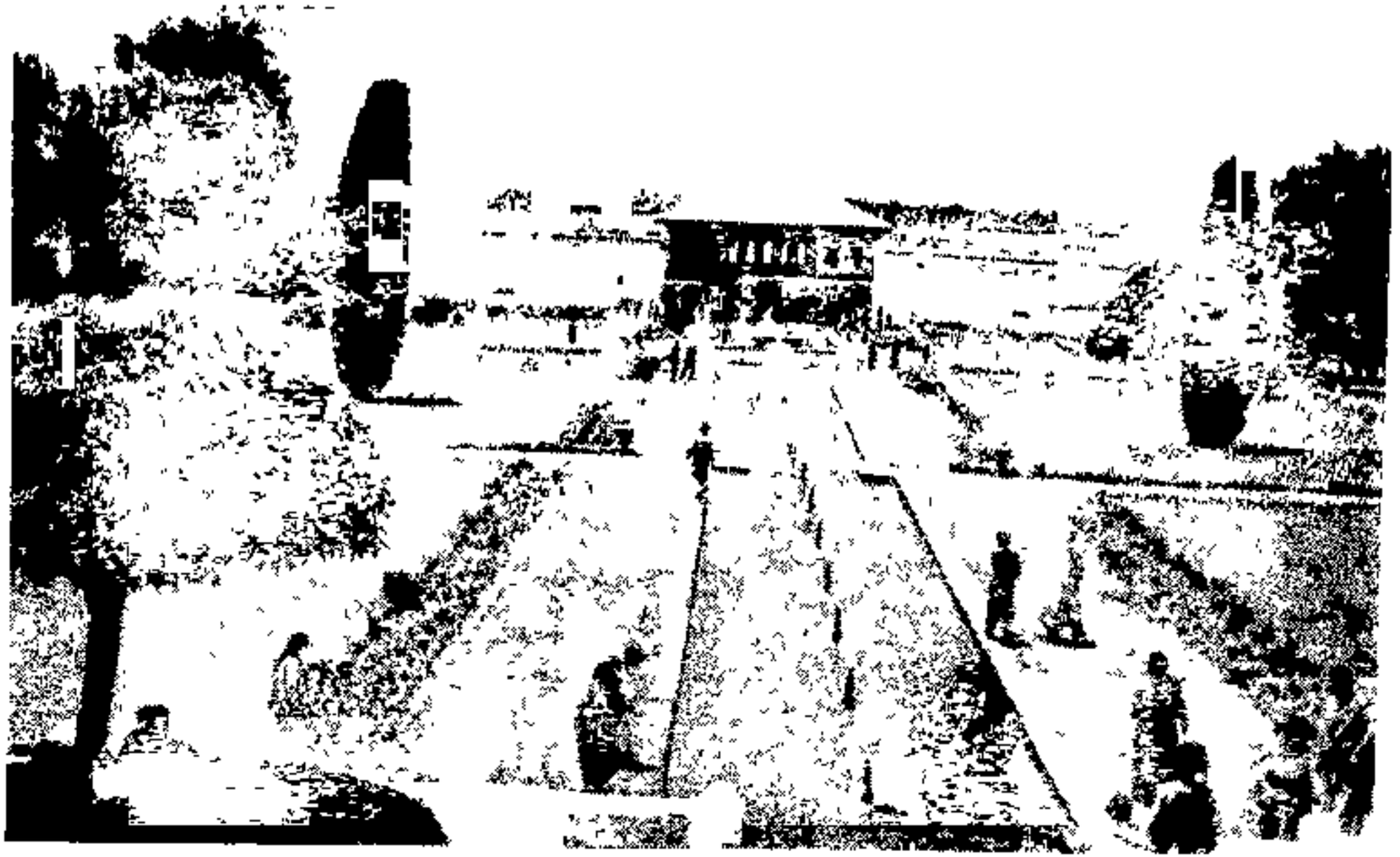

Nishat Bagh
निशात बाग

Shankracharya Temple

Sheshnag Lake

कश्मीर के प्रमुख दर्शनीय तथा स्वास्थ्य-वर्धक स्थान

कश्मीर के अद्भुत और अवर्णनीय सौंदर्य को देखकर जहाँगीर ने कहा था—

"गर फिरदोस बरूए जमी अस्त,
हमी अस्तो हमी अस्तो हमी अस्त।

अर्थात यदि पृथ्वी पर कही स्वर्ग है तो वह यही कश्मीर मे है। यहाँ प्रत्येक स्थान पर प्रकृति सौंदर्य बिखरा पडा है। कहीं सुन्दर बाग है तो कही कमलो से भरे स्वच्छ पानी के झील तालाब, कही कल-कल के गीत गाती नदिया है तो कही नया प्रेम गीत गाते झरने। कहीं ऊचे पर्वत हैं तो कही घने हरे भरे जगल। यहाँ कैलशियम" के चश्मे भी है जिनका पानी स्वास्थ्य के लिए अधिक उपयोगी होता हैं। कश्मीर ससार में एक निराला प्रदेश है। हरिकृष्ण प्रेमी ने कश्मीर सुषमा का चित्रण एक स्थान पर इस प्रकार किया है —

यह मेरा कश्मीर, कि जिसकी धरती स्वर्ग समान!
गहरे-गहरे खड्ड निराले,

ऊँची पर्वत माला,
हर चट्टान बोलने वाली
हर कौना हरियाला
इस जादू से भरे मुल्क पर,
है दुनियाँ कुर्बान,
यह मेरा कश्मीर .....।

कश्मीर घाटी मे घने जगल है और जडी-बूटिया पाई जाती हैं। यहाँ के मौसम भी अजीब है और ससार में अनोखे है। कश्मीर भारत का ही नही, ससार का भव्य प्रदश है।

पहलगाम

यह स्थान गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने के लिए बहुत अच्छा है। पहलगाम श्रीनगर से ६० मील दूर है और लिदर नदी की घाटी मे स्थित है। उसे चारो ओर से ऊचे-ऊँचे पहाडों ने घेर रखा है जिनकी चोटियाँ बर्फ का ताज पहने रहती है। पहलगाम समुद्र तल से ७२०० फुट की ऊचाई पर स्थित है और यहा की जलवायु भी बहुत अच्छी और स्वास्थ्य-वर्धक है। यहाँ बाजार भी है जहा प्रत्येक वस्तु मिल सकती है। कश्मीर घाटी के इस सुन्दर स्थान पर नए-नए होटल है यहा यात्री विश्राम कर सकते है। लिदर नाला बहुत तेज बहता है, यानि लोग घोडो पर बैठ कर दूर तक चले जाते है। पहलगाम के आस पास कई सुन्दर स्थान हैं जहाँ यात्री घूम सकते है। श्री अमरनाथ जी की गुफा का रास्ता भी यही है। चीड और देवदार के वृक्ष चारों ओर मिलते है। यात्री यहा किराये के कैम्पों में ठहर सकते है जो श्रीनगर से ही किराये पर मिलते हैं।

श्रीनगर से पहलगाम तक सडक जाती है जहाँ रास्ते मे अत्यन्त सुन्दर दृश्य देखने योग्य है। पहलगाम की छोटी-वादी मे, मखमली हरी घास पर खडे होकर जिधर भी देखे उधर ही प्राकृतिक सौदर्य अपनी ओर खीचता है जैसे उसमे जादू भरा हो। यहा डाक वगला और Huts भी है। यात्रियों को Riding PONIES भी मिल सकते है और शिकार के लिए मछलियाँ भी अधिक मिल जाती है।

गुलमर्ग :—

अत· गुलमर्ग एक अत्यन्त भव्य और आकर्षक स्थान है। यह श्रीनगर से २६ मील दूर समुद्रतल से ८,५०० फुट ऊचे पर्वत पर स्थित है लेकिन वहां ऊपर एक छोटी सी सुरग मे घाटी है। श्रीनगर से गूलमर्ग तक अब सीधी सडक जाती है पहले यहाँ तक सडक नही जाती थी यात्री घोड़ों पर या पैदल टनमर्ग से चल कर गुलमर्ग पहुचते थे। यहाँ वर्ष भर सर्दी का मौसम रहता है और वर्ष के ६ महीने वर्फ से ढका रहता है, यात्रियो के ठहरने के लिए होटल, हट्स और डाक वगले है, कैम्प भी लगाए जाते है। गुलमर्ग का गोल्फ का मैदान ससार मे प्रसिद्ध है। "गोल्फ क्लब" का यात्री आसानी से मैम्बर बन सकते है।

अधिकाँश यात्री गुलमर्ग सुवह जाते हैं और शाम को वापिस श्रीनगर आ जाते हैं। गुलमर्ग से ढाई मील ऊपर खिलनमर्ग है जहाँ वर्ष भर वर्फ पडी रहती है। यात्री घोड़ों पर बैठ कर वहाँ तक जाते है और वर्फ का दृश्य देखते है। यहाँ के दरियाले जगल चीड, देवदार के आकाश को चूमते वृक्ष अपना सौंदर्य आप हैं। गुलमर्ग में सर्दियो के खेल भी होते हैं यहाँ स्किंग और स्केटिंग खेला जाता है ये खेल ससार में प्रसिद्ध हैं। वावा ऋषि और "अलपत्थर" भी गुलमर्ग से देख सकते है। गुलमर्ग

की जलवायु बड़ी ठण्डी लेकिन स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक लाभप्रद है। स्वास्थ्य की दृष्टि से गुलमर्ग का नाम ससार में विख्यात है।

सोना मार्ग घाटी

सोनामर्ग :—

श्रीनगर से ५६ मील की दूरी पर स्थित सोनामर्ग का सौंदर्य देखने योग्य है। यह स्थान समुद्रतल से ८,६०० फुट ऊचा है इसलिए जलवायु अच्छी और सर्द है। यहाँ के ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखर साल भर बर्फ से

आच्छादित रहते हैं, हरे-भरे जगलात भी अधिक है। अत· इसकी सुन्दरता मोहित करने वाली है। श्रीनगर से सोनामर्ग तक सडक जाती है, रास्ते के दृश्य भी दर्शनीय और मनोहर है। करगिल और लेह (लद्दाख) जाने का भी यही से रास्ता है। सिंध नाला भी इसी रास्ते से होकर बहता है, इस नाले से सोनामर्ग की सुन्दरता और बढ गई है। यहाँ ठहरने के लिए एक डाक बगला और कुछ टुरिस्ट हट्स भी है। यदि यात्रियो के पास रात में यहाँ ठहरने का समय न हो तो साइट सिइग की बसों द्वारा यात्रा करके, घूम फिर कर वापिस श्रीनगर जा सकते है। सोनामर्ग अपनी प्राकृतिक छटा मे गुलमर्ग के समान ही है।

युसमर्ग :—

यह स्थान श्रीनगर से २६ मील दूर है। यह छोटी सी घाटी गुलमर्ग के समान है। युसमर्ग "पीर पजाल" के दामन में स्थित है। पहले यहाँ कोई नही जाता था लेकिन आजकल यह यात्रियों के लिए खुला रहता है और श्रीनगर से यहा तक बसें भी आती जाती है यहाँ टुरिस्ट हट्स और एक रैस्ट हाऊस भी है। युसमर्ग में पानी की एक धारा भी बहती है, ऊपर दूध गगा भी देख सकते हैं। इसी रास्ते में मुसलमानों की एक जियारत चिरार शरीफ भी आती है। यहाँ हिन्दू मुसलमान दोनों श्रद्धानत होते हैं।

अच्छाबल और कुकरनाग :—

यहाँ के बाग मुगलो के बनाये हुए हैं और देखने योग्य है। ये स्थान स्वास्थ्य के लिए भी अच्छे है। यहा मछलिया पकडने का भी अच्छा प्रबन्ध है, विशेषकर ट्राउट मछली यही अच्छाबल मे मिलती है। कुकरनाग में पानी का चश्मा मुर्गे के पजे के आकार का है जहां से साल भर

पानी निकलता रहता है जो मीठा और ठण्डा है। कुकरनाग समुद्रतल से से ६,००० फुट ऊचा है, यहां की जलवायु बहुत अच्छी है। फूलों-फलो से भरे इन स्थानो को देख कर मन को अपार आनन्द प्राप्त होता है।

मटन :—

यह स्थान अनतनाग से केवल ५ मील दूर है और पहलगाम अनत-नाग की सडक पर स्थित है। शिवजी का यहाँ एक प्रसिद्ध मदिर है। मदिर के पास ही एक छोटा तालाब है जहा मछलिया बहुत मिलती है। मन्दिर एक पहाडी के दामन मे बनाया गया है और इसी के पास एक शीतल जल का चश्मा भी बहता रहता हैं।

गांदरबल :—

श्रीनगर के उत्तर मे १३ मील की दूरी पर स्थित छोटा नगर है यहा बिजली घर भी है। श्रीनगर को बिजली यही से प्राप्त होती है। चिनारों से भरे खुले मैदान कैम्प लगाने और ठहरने के लिए अच्छे है। सिन्ध नाला यहीं से होकर बहता है इससे गाँदरबल की सुन्दरता निखर गई हैं। यहाँ से ३ मील खीरभवानी का प्रसिद्ध मदिर है और कुछ दूरी पर मानसबल की दर्शनीय सुन्दर विशाल झील है।

अहरबल फाल :—

श्रीनगर से ४१ मील दूर अहरबल का झरना अपने प्राकृतिक सौंदर्य मे बेजोड है यह स्वास्थ्यवर्धक स्थान भी है शोपियाँ के रास्ते से होकर वहाँ जाते है स्वच्छ निर्मल पानी का प्रपात (वाटर फाल) ७५ फुट की ऊचाई से गिरता है और एक छोटे नाले का रूप धारण कर जगलों, पहाडो से रास्ता निकालता बहता है। यहाँ एक सुन्दर झील भी है, अहर-

चल की प्राकृतिक सुषमा दर्शनीय है। श्रीनगर से वहाँ तक सडक जाती है।

वूलर झील :—

कश्मीर या भारत मे ही नही यह विशाल, विस्तृत झील तो ससार में प्रसिद्ध है इसका पानी कुछ गहरा नीला दिखाई देता है। बान्डीपूर नामक स्थान से इस विशाल झील का दृश्य मनोहर और आकर्षक लगता है। कोमल, लघु तरगो का विलास भरा नृत्य किसे मोहित न करेगा? साईट सिइग की बसों द्वारा इसके दर्शन किए जा सकते है। श्रीनगर से वुलर झील तक और भी बहुत से सुन्दर दृश्य देखने को मिलते है। कहा जाता है जहाँ यह झील है वहा एक बडा नगर था जो भूचाल में नष्ट-भ्रष्ट हो गया। 'वूलर' का अर्थ है 'गुफा'। किंदन्तियों द्वारा प्रसिद्ध है कि यहा के प्राचीन नगर को मछली पकडने वाले और नाविको ने देखा था.

वैरीनाग :—

यह स्थान पीरपजाल के उत्तर में स्थित और बानिहाल श्रीनगर के रास्ते मे आता है। यही से झेलम नदी भी निकलती है। वैरीनाग में पानी का एक बहुत बडा चश्मा है, जिसका पानी गहरे नीले रग का है। पहाडी दामन में स्थित होने से यह बडा सुन्दर लगता है। इस चश्मे के आस पास एक बाग भी लगाया गया है। कहते है यह चश्मा जहाँगीर बादशाह ने बनवाया था। चश्मे के निकट चिनार के विशाल वृक्ष अपनी अलग सुन्दरता पैदा करते है। श्रीनगर से अनेक यात्री यहा घूमने आते है।

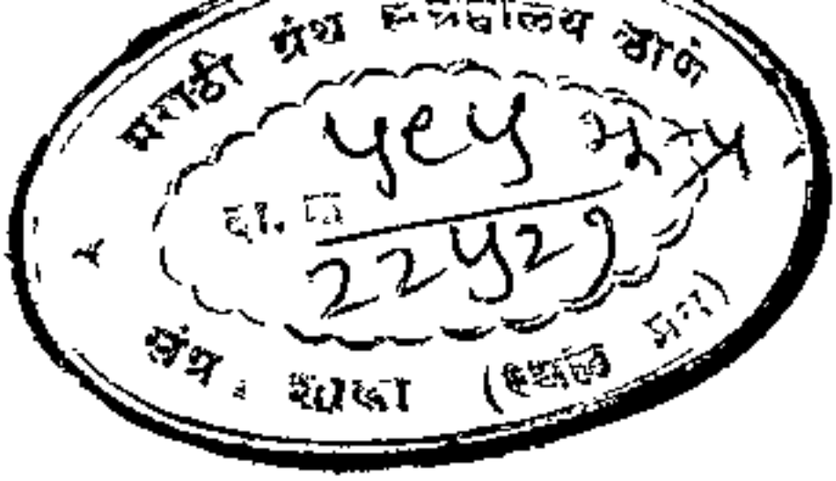

कश्मीर के मौसम और मेवे

मौसम

काश्मीर समुद्रतल से ५००० फुट ऊचा है। यहाँ सर्दी अत्यधिक पडती है। समुद्रतल से ऊँचा, पर्वत और वन कश्मीर को गर्मियों में भी शीतल रखते है। यहा के पर्वत समुद्रतल से १००० से २८,००० फुट तक ऊँचे है। यहाँ औसत वर्षा २७ इच वार्षिक होती है। भारतवर्ष के मानसून से कश्मीर अप्रभावित रहता है। अप्रैल से अक्तूबर तक का मौसम यहाँ अत्यधिक सुहावना होता है। कश्मीर का सौन्दर्य इन्हीं दिनों देखने लायक होता है। चहल-पहल बढ जाती है। टूरिस्ट हजारों की सख्या में आने लगते हैं। उस समय सूती, टैरीलीन टैरीवूल अथवा हल्के गर्म कपडों मे काम चल सकता है। अप्रैल मई में वर्षा के कारण गर्म कपडो की आवश्यकता होती है।

नवम्बर मे यहा पतझड का मौसम होता है। और इसी महीने में ही पारम्पोर में केसर को उठाया जाता है, केसर (जाफरान) के फूलों के दर्शन करने बहुत से यात्री रात मे वहा जाते है। नवम्बर की समाप्ति तक रात का तापमान जीरो' से नीचे गिर जाता है और माइनस' की ओर बढने लगता है। दिसम्बर से फरवरी के अन्त तक सारी वादी बर्फ से ढक जाती है। और सर्दी बढ जाती है।

यहा की स्नोफॉल देखने की चीज है। गर्म-गर्म 'हिस्सा' (कुटे हुए माँस की बनी एक वस्तु) खाते है। कागडी (एक प्रकार की अगीठी] के बिना यहा सर्दी में जीवित रहना भी असम्भव सा है। माँस के लिए भेड-बकरियाँ यहाँ बाहर से मगाई जाती है। श्रीनगर में ३-४ फुट तक बर्फ पडती है। झीलों और तालाबों का पानी जम जाता है। ऊचे पहाडो पर १० फुट तक बर्फ पडती है। गुलमर्ग में तो विन्टर स्पोर्ट का भी प्रवन्ध किया गया है जहा स्केटिंग आदि की ट्रेनिग भी दी जाती है।

यह बर्फ कश्मीर को शीत-नरक (हेल आफ कोल्ड) बनाने वाली ही क्यों न हो लेकिन यह कश्मीर के लिए वरदान है। इसी से कश्मीर का सौन्दर्य आकर्षक वनता है इसी से वादी में झरने, चश्मे, नदियाँ मस्ती मे बहती है। गिलेसियरस इसी से उत्पन्न होते हैं। ओवर कोट लगाकर, छाता लेकर आप कहीं भी पैदल जा सकते है और स्नोफॉल का अपार आनन्द लूट सकते है।

फरवरी के अन्त और मार्च के आरम्भ मे बसन्त ऋतु शुरु हो जाती है और नये-नये फूल खिलने लगते है। सर्दी भी कम होने लगती है और लोग इधर-उधर बाहर घूमने निकलते है और धूप का आनन्द लेने लगते है।

मेवे-फल

कश्मीर फलों का देश है। यहाँ बहुत मात्रा में कितने ही प्रकार के मेवे और फल मिलते है। प्रति वर्ष यहाँ से हजारो मन मेवे-फल वाहर भेजे जाते है और कितने ही लोगो की जीविका का आधार यही कारोवार है। कश्मीर के प्रसिद्ध मेवे ये है—सेव, नाशपाती, आलूबुखारा, अनार अगूर, चेरी, आडू, खुमानी, अखरोट, वादाम इत्यादि। कश्मीर के सेव बड़े लोकप्रिय हैं और यहाँ सेवो की एक सौ से अधिक किस्मे (वैराइटिज) हैं।

अक्तूबर का महीना यहा बडा सुहाना होता है। उस समय सर्दी बढना आरम्भ होती है सभी तरह के फलों-फूलों से वादी का सौदर्य अद्भुत हो जाता है। निशात, शालमार, चश्मेशाही, अच्छाबल, कुकश्नाग आदि की प्राकृतिक छटा नयनाभिराम होती है। नवम्बर मे यहाँ पतझड का मोसम होता है। उस समय शीत के डर से मानो सभी पेड-पौधे पीले पड जाते हैं और पत्ते नीचे गिरने लगते हैं फिर तो यहाँ वे नग्न होकर अपनी दीनता प्रकट करते हैं। पतझड में चिनार की शोभा आकर्षक और दर्शनीय होती है। हमारे वृक्ष ऐसे प्रतीत होते है जैसे उनमे आग लगी है, जब चिनार का लाल पत्ता नीचे गिरता है तो लगता है मानो आग का शोला जमीन पर गिर रहा है। नवम्बर मे ही पाम्पोर में केसर को उठाया जाता है—अक्तूबर नवम्बर मे केसर (जाफरान) के फूलो के दर्शन करने बहुत से यात्री रात में वहाँ जाते हैं। नवम्बर की समाप्ति तक रात का तापमान 'जीरो' से नीचे गिर जाता है और माइनस (—) की ओर बढने लगता है। दिसम्बर मे फरवरी के अन्त तक सारी वादी बर्फ की सफेद पोशाक धारण कर लेती है। ये दिन बडे कष्टप्रद होते है। बहुत से लोग इन दिनो जम्मू की ओर मैदानों में जाडे से बचने चले आते है।

यहाँ की बर्फबारी देखने की चीज है। जिस दिन पहली बार बर्फ पडती है तो लोग एक दूसरे को बधाई देते है। गर्म गर्म 'हिरसा' (कुटे हुए माँस की बनी हुई एक वस्तु) खाते है। 'कागडी' (एक प्रकार की अगीठी) के बिना यहा सर्दी में जीवित रहना भी असभव-सा है। चाहे खाना न मिले, लेकिन आग से भरी 'कागडी' जरूरी है। सभी कश्मीरी सर्दियों के लिए कीयला, सूखी सब्जी आदि जरूरी चीजे जमा करके रखते है। सर्दी मे जरूरत की चीजें भी कम मिलती है। कभी-कभी माम के दाम भी बढ जाते है, क्योंकि उसकी खपत बढ जाती है। हिन्दू-मुसलमान

सभी बिना किसी भेदभाव के मांस खाते है। मांस के लिए भेड-बकरियां वहाँ बाहर से मगाई जाती है। सर्दी के मौसम को वहां चिल्ला कलान, चिल्ला खुर्द, चिल्ला बच्चा इन तीन पक्षों में विभाजित किया गया है। सर्दी का अधिक प्रकोप चिल्ला कलान में ही रहता है कश्मीर में बर्फ-बारी नवम्बर से अप्रेल तक बहुत-सी बार होती हैं। यहा श्रीनगर मे ३-४ फुट तक बर्फ पड जाती है। उस समय मीलों, तलाबों का पानी जम जाता है। ऊचे पहाडो पर १० फुट बर्फ पडती है। गुलमर्ग में तो कभी कभी दरवाजे और खिडकियों तक बर्फ पड जाती है। अब तो वहा जाडो के खेल (विन्टर स्पोर्टस) का भी प्रबन्ध किया गया है जहा स्केटिंग' आदि की ट्रेनिंग भी दी जाती है।

यह बर्फ पेडो पर लिपटी ऐसी मालूम होती है जैसे रूई लगी हो। कभी कभी रास्ते भी रुक जाते है। यह बर्फ भले ही जाडों में कयामत पैदा करने वाली हो—कश्मीर को 'शीत-नरक' (हेल ओफ कोल्ड) बनाने वाली हो मगर यह कश्मीर के लिए वरदान है, इसी से कश्मीर का सौदर्य आकर्षक बनता है, इसी से वादी में झरने, चश्मे नदियाँ मस्ती से बहती हैं। आबशारो की जननी यह बर्फ ही है। ग्लेशियर (ग्लेशियर) इसी से उत्पन्न होते है। लेकिन अत्यधिक बर्फ बारी हानिकारक ही है, इसका प्रभाव गर्मी की ऋतु पर भी पडता है। फिर भी बर्फ बारी का नजारा देखने योग्य है, इसमे एक अजीब तरह का जादू है मोहकता है, कोमलता है स्निग्धता और शुभ्रता है। बर्फ के छोटे-छोटे टुकडे सफेद रुई के गोले जैसे लगते हैं। काँगडी लिए, था ओवरकोट लगाये, छाता लेकर आप कही भी पैदल जा सकते है और बर्फबारी का अपार, दुर्लभ्य आनन्द लूट सकते है।

फरवरी के अन्त और मार्च के आरम्भ मे यहा बसत ऋतु अगडाई लेनी शुरू करती है, उस समय नए-नए फूल खिलते है, सर्दी कम होने

लगती है, और लोग बाहर इधर-उधर घूमने निकलते है' धूप का आनन्द लेते हैं, ।

मेवे–फल

कश्मीर बर्फ का देश तो है ही, यह फलों का भी देश है । यहाँ बहुत मात्रा मे कितने ही प्रकार के मेवे और फल मिलते है । कश्मीर के मेवे तो ससार में अपनी मिसाल आप है । प्रति वर्ष यहाँ से हजारो मन मेवे फल बाहर भेजे जाते है और कितने लोगों को इन्ही के आधार पर जीविका मिलती है । मेवों को लकडी के छोटे बक्सो में बन्द कर भेजा जाता है । मेवें के बागात कश्मीर मे बेशुमार है, वे मैदानों और पहाडी ढलान पर अधिक मिलते है । फलों के पेडों को कीडो से बचाने के लिए कई वैज्ञानिक औषधिया काम में लाई जाती है । सरकार की ओर से मेवों की उन्नति के लिए विशेष सुविधाए दी जाती है । कश्मीर के प्रसिद्ध मेवे ये है —सेब, बादाम, अखरोट, नाशपाती, खूबानी, आलूबुखारा, अनार, अगूर, चेरी, ग्लास, आडू । कश्मीर के सेब बडे लोकप्रिय है यहाँ सेबों की एक सौ से अधिक किस्मे (वैराइटिज) हैं,

◆◆◆

प्रत्येक प्रकार के फोन न० ३७४१

नॉयलौन के मौजे, जांघिए, उनी जर्सियां, लेडीज कोटीज, टोपा ग्लोवज, रेडीमेड कपडे, कमीजे, टी शर्ट, पेन्ट इत्यादि, बाबा सूट, फ्राक, जीन्स, नए फैशन के लिए पधारे—

ईश्वर सिंह इकबाल सिंह

२६ बुडशाह मार्किट, लाल चौंक श्रीनगर (काश्मीर)

कश्मीर का इतिहास

कश्मीर का अधिकांश भाग पहाडी हैं अत यहाँ आबादी भी कम है, १९६१ की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसख्या ३,५८,३५८ है। इसका क्षेत्रफल ८६० ४ वर्ग मील है।

कहा जाता है कश्मीर पहले सतीसर नाम का तालाब था जहाँ एक दैत्य रहता था जो लोगो को बहुत सताता था। कश्यप नामक ऋषि से जब लोगों ने अपनी पीडा का वर्णन किया तो कश्यप ऋषि ने उस तालाब काटकर सुखा दिया और तदुपरान्त राक्षस भाग गया। इसी कारण इस वादी का नाम "कश्यप मीर" पडा जो बाद में बिगड कर कश्मीर हो गया।

आर्यों के आने से पहले कश्मीर मे नाग-पिशाच रहते थे। लेकिन आर्यों के आवागमन से इधर उधर भाग गए या युद्ध में मारे गए और कुछ आर्यों मे हो घुल मिल गए। आज मूल कश्मीरी कही नही हैं।

अशोक के समय में यहाँ बौद्ध धर्म का खूब प्रचार-प्रसार हुआ, उस युग के मठ व बिहार आज भी भग्नावशेष रूप मे प्राप्य है।

कनिष्क के समय बौद्धों की एक विराट सभा हुई। कनिष्क के नाम पर बारहमूला के निकट कनसपुरा बसा है। मिहिर कुप हूणों का सर-

दार था, उसका राज्य भी यहाँ कायम हुआ। प्रवर सेन, ललितादित्य का नाम भी कश्मीर के इतिहास मे उल्लेखनीय है। मटन के पास 'मार्तण्ड' का मन्दिर ललितादित्य ने ही बनवाया था। हर्ष के युग मे भी कश्मीर ने विद्या, सगीत, शिल्प मे बहुत उन्नति की। चौदहवी से सोलहवी शताब्दी तक कश्मीर पर मुसलमान बादशाहो ने हकूमत की। सुलतान शम्सुद्दीन यहां का प्रथम मुसलमान बादशाह था। सुल्तान जैनूल आबदीन का नाम तो सदा अमर रहेगा वह यहाँ का बडा ही लोक प्रिय राजा था। उसे लोग 'बडशाह' (बडा बादशाह) कहते थे। उसके नाम पर यहाँ 'जीना कदल' और 'बडशाह ब्रिज', 'बडशाह होटल,' बडशाह चौक' हैं। उसके पश्चात् कुछ वर्षों तक चक-वश का राज्य रहा। बाद मे यहाँ मुगल बादशाह आए।

अकबर बादशाह यहाँ तीन बार आया। १५८७ मे उसने टोडरमल को साथ लेकर कश्मीर मे लगान की व्यवस्था की। उसी ने यहा विशाल चिनार के वृक्ष लगवाए और हारी पर्वत पर उसी के द्वारा बनवाया गया किला आज भी मौजूद है (जो सैयाहों को दूर से ही अपनी ओर खीचता है।) अकबर के बाद जहागीर और शाहजहाँ ने भी कश्मीर पर राज्य किया। इन मुगल बादशाह ने कश्मीर में प्रसिद्ध बाग लगवाए और मस्जिदें बनवाईं। शालीमार और निशात जहाँगीर और आसफजहाँ ने बनवाए, शाहजहा ने श्रीनगर की जामा मस्जिद बनवाई।

लेकिन १७५७ के बाद से कश्मीर सकट मे पड गया। उस समय अहमदशाह दुर्रानी ने कश्मीर को अपने अधीन किया। १८१९ में रणजीतसिह के सरादर गुलाब सिह ने कश्मीर पर आक्रमण किया। १८४६ की सधि के अनुसार अग्रेजों ने ७५ लाख रुपए में कश्मीर को गुलाबसिह को दे दिया। गुलाबसिह के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी जनता का प्रेम और सहयोग प्राप्त न कर सके, परिणाम स्वरूप १९३१ में यहा मुस्लिम

कान्फ्रेन्स द्वारा स्वाधीनता का आन्दोलन चलाया गया। मुस्लिम कान्फ्रेंस नेशनल कान्फ्रेंस मे बदल जाने से सभी लोग इस अभियान में कूद पडे। १९४७ मे कबालियो का भी यहाँ के लोगों ने बहादुरी से मुकाबला किया। इसके बाद यहा जम्हूरी शासन स्थापित हुआ और शेख अब्दुला के नेतृत्व मे कश्मीर का भारत के साथ इल्हाक हो गया। पहली जनवरी १९४९ में U. N O के प्रयत्न से भारत पाकिस्तान मे जगबन्दी की गई। इसके बाद भी पाकिस्तान ने १९६५ मे अपने मुजहिद (घुसपैठिए) भेज कर भारत के साथ खून कर जग की, लेकिन फिर U N. O के प्रयत्न से वह लडाई बन्द हो गई और "ताशकद समझौता' किया गया। इस समझौते मे पाकिस्तान भारत की मध्यस्थता रूस ने की।

अब कश्मीर की रियासत अपनी एक स्वतत्र असेम्वली रखती है। प्रधान मन्त्री और सदरे रियासत के स्थान समाप्त हो गये। दूसरे प्रान्तों की भांति यहा भी मुख्य मन्त्री अपने मन्त्रीमण्डल के द्वारा शासन की व्यवस्था कर रहा है। शेख अब्दुला के पश्चात् बख्शी गुलाम मुहम्मद ने प्रधान मत्री के रूप मे १० वर्षों तक यहा का शासन चलाया। उनके समय मे कश्मीर ने महत्वपूर्ण उन्नति की। यहाँ का मैडिल कालेज, हरि-सिंह हास्पिटल, यूनिवर्सिटी, स्टेडियम, टैगोर हाल, नेहरू पार्क, असेम्बली बिल्डिग आदि उन्ही के समय निर्माण में आए। एम पी स्तर तक तभी से यहाँ मुफ्त शिक्षा दी जा रही है जिससे यहा के निर्धन वर्ग को विशेष रूप में उन्नति के अवसर मिले। इस समय श्री गुलाम मुहम्मद सादिक यहाँ मुख्य मन्त्री है। उन्होंने जनता को सम्पूर्ण आबादी प्रदान कर रखी है। इस समय सरकार की आलोचना करने से भी लोग पीछे नहीं रहते।

यहाँ हिन्द, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध सभी मिल जुल कर रहते हैं।

कश्मीर के लोग और उनका रहन-सहन

कश्मीर में हिन्द, मुसलमान दोनो मुख्य जातियाँ पारस्परिक सद्-भावना के साथ रहती है। कश्मीर के लोगो को रहन-सहन सीधा साधा है। यह भूमि सन्त और महात्माओं की,। सूफी और दरवेशों की भूमि है।

कश्मीरी लोग हिन्दू-मुसलमान दोनों एक खास पोशाक पहनते हैं जिसे 'फिरन" कहते हैं। यह एक प्रकार ढीला ढाला चौगा या अगरखा सा होता है जिसकी आस्तीन चौडी, खुली और बिना कफ के होती है यह यहाँ का ट्रेडीस्नल कस्टम है। हिन्दू-मुसलमान दोनों ही पगडी लगाते हैं। इससे यहाँ की एक सस्कृति का रूप स्पष्ट होता है। (बच्चे भी फिरन लगाते है। छोटी लडकिया माथे के ऊपर से सिर पर रूमाल-सा बाँधती है जिसे कश्मीरी मे 'कसाबा' कहते हैं। 'कसाबा' लगाये छोठी लडकियाँ बडी आकर्षक और मनोहर लगती है।)

कश्मीरी आभूषण भी विचित्र प्रकार के होते है। (कल्हण ने अपनी "सगतरगिनी" मे आभूषणो का उल्लेख किया है—'हार, चूडी, बाजूबन्द

कुण्डल आदि जेवर यहां बड़े शौक से पहने जाते हैं। कानों में बाली की तरह का जेवर पहना जाता है जिसे कश्मीरी में 'कनवाज' कहते हैं।

काश्मीर युवती

हिन्दू स्त्रियाँ कानों में 'देजी हूर' पहनती है जिसका आकार सितारे जैसा होता है, यह एक लम्बी डोर से कानों में लटका रहता है। यह सुहाग की निशानी होती है। नाक में यहाँ नथ पहनने का रिवाज नहीं है। नाक में वैसे औरतें एक ओर छेद कर 'नमवाज' या 'रुम' नाम के जेवर पहनती है। गले में 'हल्का बन्द' या 'गुलबन्द' पहना जाता है। 'तरर' सोने चाँदी की माला होती है। 'पौड माल' एक माला या हार है जिसमें

सोने के सिक्के जडे होते है । यहां के सिक्के को ही पौड कहते हैं । नाक में 'नसवाज' और 'रुग' पहना जाना है कश्मीर मे नथ पहनने का रिवाज नही है जैसा कि उ प्र या पजाब में है । हाथ मे 'वाजा' और 'दायर' नामक जेवर स्त्री-पुरुष दोनों पहनते हैं । यह अगुठी ही होती है । स्त्रियों की अगुठियाँ अधिक सुन्दर नग्नजडित होती है । कलाई पर 'कोड' और 'वुगर' जो कडे या चूडी जैसे होते है स्त्रियाँ बडे शोक से पहनती है । सिर का जेवर 'तालारज' है यह एक जडाव जजीर है जो तालू के ऊपर से होकर दोनो ओर 'कनवाज' को मिलाती है । माथे के जेवरो मे 'ताविजा' और 'चिदर' भी उल्लेखनीय है परन्तु अव इनका रिवाज नही है । आजकल सोने का 'झूमर' अधिक लोकप्रिय है ।

कश्मीर मे मेले और त्योहार भी अधिक मनाए जाते है । कश्मीर दिसम्बर से फरवरी के अन्त तक बर्फ के कारण बडे कष्टों मे फसा रहता है । कभी कभी तो घर से बाहर निकलना भी असभव हो जाता है । रास्तो, गली-कूचो मे ३-४ फुट ऊची बर्फ पडी रहती है । धीरे-धीरे समय बीतने मे 'चिल्ला कलाँ' 'चिल्ला खुर्द' और 'चिल्ला बच्चा' सभी शीत के दिन वीत जाते है फरवरी के अन्त में बर्फ की चादर हटने लगती है सर्दी कम हो जाती है तभी से यहाँ मेले और त्योहार शुरू होते हैं । बादाम के पेडों में रगीन मनोहर फूल—'शगूफे खिलने लगते है । श्री-नगर मे हारी पर्वत के समीप बादाम के बागों मे बहार आती है । यहा 'बादामबारी' नाम का मेला लगता है । जहा कश्मीरी लोग जगह-जगह बैठे कही सिघाडे खाते नजर आते हैं तो कही कश्मीरी चाय नमकीन

कुछ गुलाबी रंग की चाय पीते दिखाई देते है। इस मेले में कश्मीर का सारा सौंदर्य सिमट कर बादाम के शगूफों से बाजी लगता है। स्त्रियो से तो इस मेले मे नया जीवन आता है उसका रंग दुगना हो जाता है। इसी सुहाने समय हिन्दुओं का एक बडा त्योहार शिवरात्री मनाया जाता है। इसमें शिव-पार्वती की पूजा की जाती है। हिन्दू स्त्री पुरुष एक-दूसरे के यहाँ जाते हैं, मिठाई रुपया आदि लडकियों को भेंट किये जाते हैं। अखरोट भी अवश्य दिए जाते हैं। बैसाख के पहले दिन बैशाखी का त्यौहार यहाँ खूब धूम धाम से मनाया जाता है। इस दिन मुगल बागात खोले जाते है यहाँ हजारों की सँख्या मे लोग जमा होते है और संगीत की महफिल भी देखने को मिलती है। श्रीनगर से ४-५ मील हैदरपुर गाव में बहार के मौसम में यहा एक मेला लगता है। यहां समन के फूलो की शोभा देखने योग्य है मालूम होता है पृथ्वी पर चाँदनी ऊतर आई है। सैंकडों लोग इन फूलों की मद गध से मस्त हो जाते है। निशात बाग हो या बादाम बारी का मेला हो या और कोई ऐसा स्थान है कश्मीरी 'समरवार' लिए चाए पीते जरूर नजर आयेंगे।

मुसलमानों के पवित्र धार्मिक स्थान यहाँ कई एक है। सबसे बडा पावन तीर्थ डल को एक किनारे मे 'हजरतबल' है। यहाँ बाग और चिनार के वृक्षों में घिरी एक सुन्दर मस्जिद है जहा पेगम्बर हजरत मुहम्मद के सिर के पवित्र बाल रखे हैं। साल में दो तीन बार वहा बडी भारी तादात में मुसलमान लोग जमा होकर इबादत करते हैं हारी पर्वत के एक और हिन्दुओं का शारीका का मन्दिर है और दूसरी ओर मखदूम

साहब की जियारत गाह है, वहाँ भी बडा उर्स लगता है। अब इसे नये ढग से सगमरमर से और अधिक भव्य बनाया जा रहा है। श्रीनगर मे ही खानियार मे दस्तगीर साहब की जियारतगाह सडक के निकट ही है। यहाँ भी बडा उर्स लगता है। नौहट्टा मे, सडक के किनारी शाहजहा की बनाई जामा मस्जिद है जिसमें सैकडों देवदार के खम्बे या सतून हैं। यह एक विशाल मस्जिद है जो दर्शनीय है। पत्थर मस्जिद, शाहे हमदान आदि ऐसे ही अन्य पवित्र स्थान हैं। श्रीनगर से २०-२२ मील दूर चिरार शरीफ में नूरुद्दीन साहब का मजार है। हजरत नूरुद्दीन मे हिन्दू सत स्त्रीललदेत का दूध पिया था। वहाँ भी हजारो निष्ठावान और श्रद्धालु मुसलमान उर्स मे शरीक होते हैं।

हरी पवत के अतिक्ति हिन्दू लोगो का लुलमुला मे भी एक तीर्थ स्थान है वहाँ 'खीरभवानी' नाम का भारी मेला लगता है। कहा जाता है कोई माँस खाकर नही जा सकता, अगर जाएगा तो उसका अनिष्ट होगा। वहाँ एक चश्मा है जिसमे पानी रात के विविध रगो में परिवर्तित होता है।

कश्मीर मे अमरनाथ की गुफा एक विख्यात हिन्दू तीर्थ है जहाँ प्रत्येक वर्ष हजारों यात्री देश के विभिन्न प्रदेशों से दर्शनार्थ आते है यह गुफा एक मुसलमान द्वारा ज्ञात की गई इसलिए वहाँ की भेट का एक भाग उस मुसलमान-वश मे भी दिया जाता है। अमरनाथ मे बर्फ का लिंग श्रावण की पूर्णमासी को असख्य श्रद्धालुओं द्वारा देखा जाता है। वहाँ बर्फ का लिग धीरे-धीरे बनता बिगडता है। अमरनाथ की गुफा

१३००० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। उसकी पहलगाम से दूरी २८ मील है।

कश्मीर के लोग आर्यवंश के हैं। उनका नाक-नक्शा आकर्षक, रंग गौरा और सुन्दर, कद लम्बा होता हैं। नाक भी लम्बी होती है। हृदय से सहानुभूतिपूर्ण और सहन शील होते हैं वे मेहमान नवाज भी अधिक है। कलाकौशल और दस्तकारी में उनकी प्रसद्धि सर्वत्र है। हिन्दू-मुसलमान दोनों धार्मिक प्रवृति के है और धर्म की दृष्टि से उनमें तनिक भी संकीर्णता नही यहाँ के लोगों का पेशा बागबानी, पशु-पालन, लकडी काटना, खेती करना दस्तकारी और व्यापार है। कश्मीर के लोग प्रब खुशहाल और प्रगतिशील हैं। वह कश्मीरी बोलते है। यह भाषा पहाडी भाषा है जिसमे सम्कृत और फारसी के शब्द अत्यधिक हैं। उसकी लिपी उर्दू की भाँति है, लेकिन अपूर्ण है। उसका साहित्य अधिकांश अप्रकाशित है। वह साहित्य से अधिक बोलचाल की भाषा है। उसका उच्चारण सरल नहीं

कश्मीर के लोग दस्तकारी और व्यापार अधिक करते हैं। गाव मे चावल, मक्का, फल आदि पैदा किये जाते हैं। यहा के लोग कला-कौशल में स्वाभाविक रूप से अधिक रुचि रखते हैं, इसी कारण यहां की कारीगरी दुनिया में मशहूर है। कश्मीरी परीश्रमी भी अधिक होते हैं। कडे से कडे जाडे में भी वे अपना कारोबार जारी रखते है।

कश्मीर के धार्मिक स्थान

कश्मीर कश्यप ऋषि की, सन्तों, सूफियो की भूमि है। यहाँ स्थान स्थान पर मदिर, मस्जिद और गुरूद्वारे हैं। जम्मू बनारस की भाँति 'मदिरों का नगर' कहा जाता है।

वैष्णो देवी

जम्मू से जब श्रीनगर आते हैं तो रास्ते मे कटडा होते हुए वैष्णो-देवी के दशन करने बहुत से यात्री जाते है। यह स्थान जम्मू से ४० मील दूर है। वैष्णो देवी का मदिर एक गुफा में है जो समुद्रतल से ५३०० फुट ऊँची है। यह गुफा देवी ने त्रिशूल की प्रहार कर पहाड़ मे बनाई है। प्रत्येक वर्ष यहाँ लाखों यात्री दर्शनार्थ आते हैं। गुफा के अन्दर भगवती वैष्णो देवी, महाकाली, महालक्ष्मी सरस्वती नाम की तीन पिण्डिया है जो भगवती वैष्णो देवी के ही स्वरूप हैं। इन मूर्तियों के पावन चरणों से निर्मल जल-की धाराएँ प्रवाहित होती हैं इसे 'वाण गगा' भी कहते हैं। गुफा के बाहर यात्री यहा स्नान करके देवी के दर्शन करते हैं।

इसके अतिरिक्त जम्मू में रघुनाथ मँदिर, रणवीरेश्वर का मदिर,

शिव मदिर, तलब खाटिकान मस्जिद, सुन्दर सिंह गुरुद्वारा, सिंहसभा गुरुद्वारा, St पौलस, चर्च, कैथोलिक चर्च आदि धार्मिक स्थान हैं।

अमरनाथ

कश्मीर मे श्री अमरनाथ की गुफा एक परम पावन तीर्थ स्थान है। यह श्रीनगर मे ८८ मील दूर है। समुद्रतल से १२७२८ फुट की ऊचाई पर ६० फुट लम्बी, २५ ३० फुट चौडी, १५ फुट ऊँची प्राकृतिक गुफा ऊँचे पर्वत पर स्थित है। यहाँ बर्फ का शिव-लिंग बनता है। शिवलिंग

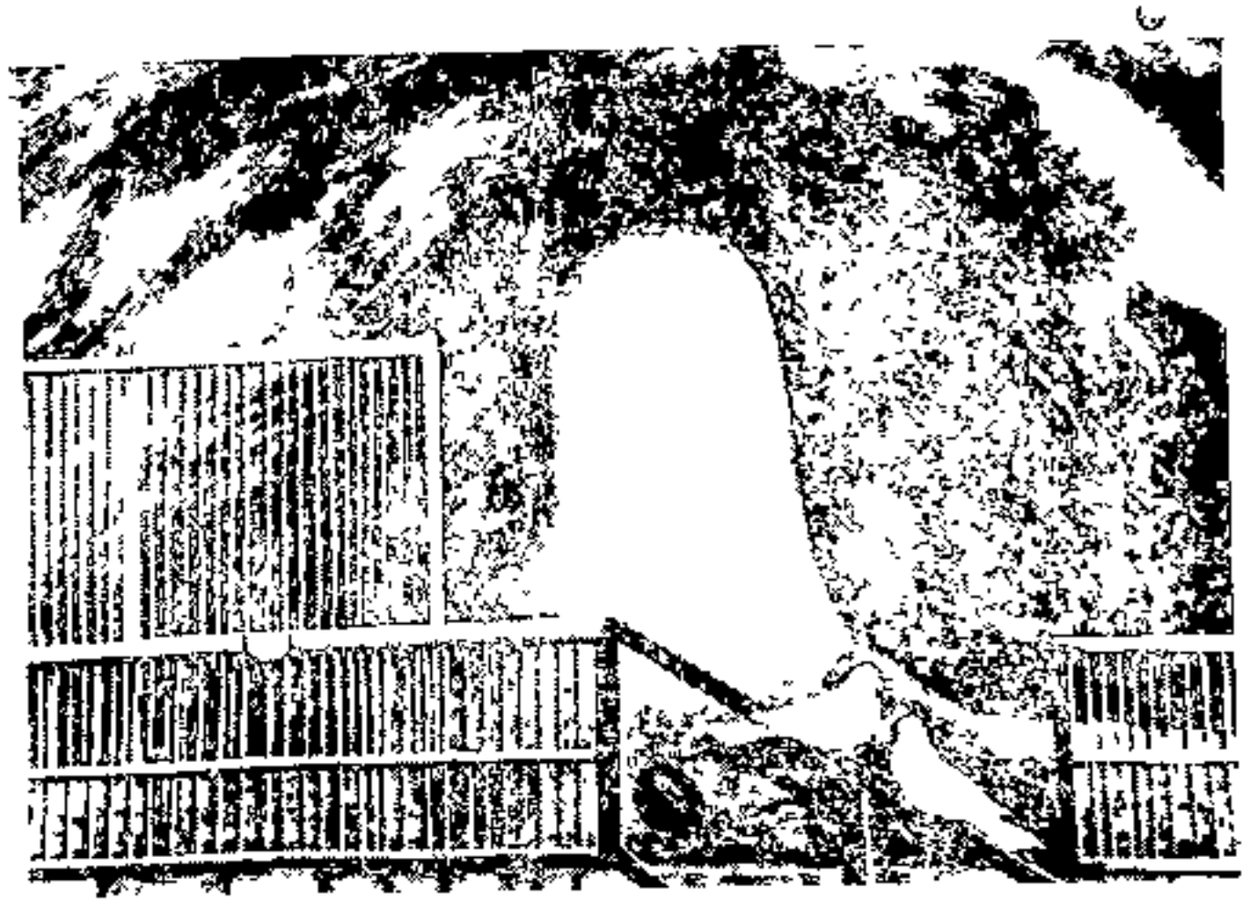

श्री अमर नाथ गुफा

धीरे-धीरे बनता है और धीरे-धीरे बिगडता है। गुफा मे गणेश और पार्वती के पीठ भी बर्फ के बनते हैं। गुफा के नीचे अमर गगा बहती है

जहा स्नान कर लोग गुफा में दर्शनार्थ जाते है। अमरनाथ की यात्रा श्रावण पूर्णिमा को होती है। जुलाई से अगस्त तक यात्री वहाँ दर्शनलाभ प्राप्त करते है।

श्रीनगर से पवित्र छडी एक जलूस के साथ ले जाई जाती है। श्रीनगर से पहलगाँव चदनवाडी, शेषनाग, पचतरणी मे पडाव डालते यात्री सरलता से पवित्र गुफा तक पहुच जाते है। सरकार की ओर से डाक-तार, खाद्य-सामग्री, चिकित्सा आदि की अच्छी व्यवस्था की जाती है।

खीर भवानी

तुलामुला मे, श्रीनगर से १६ मील दूर खीर भवानी का मदिर है। वहाँ प्रत्येक मास की अष्टमी को भक्तो का मेला होता है। इसके अतिरिक्त अषाढ की अष्टमी को यहाँ वर्ष का एक विशाल मेला लगता है। कहा जाता है कोई यात्री उस दिन मास खाकर नही जा सकता। यह भी विश्वास किया जाता है कि मदिर के पास जो चश्मा है उसका पानी रात मे कई रग बदलता है। कश्मीर के पण्डित वहाँ अधिक जाते है।

शंकराचार्य :;

श्रीनगर मे टूरिस्ट सेंटर और डल झील के निकट शकराचार्य पहाडी है जो ६,२८३ फुट ऊँची है। राजा सन्धिमान ने तीसरी शताब्दी से पूर्व इस पहाडी पर एक शानदार मन्दिर बनवाया था। शकराचार्य जब यहाँ आए तो उनके नाम पर इस पहाडी का नाम भी शकराचार्य पहाडी पड गया। यहा चढने की एक पगडडी है। पहाडी पर शिव-मदिर है और वहा से दर्श वानिहाल, मुगल बाग आदि खूब दिखाई देते हैं। रक्षा बन्धन के दिन वहाँ विशेष रूप से चहल-पहल देखने को मिलती है।

हारी पर्वत :–

यह पहाडी श्रीनगर से ४ मील दूर है, इस पर अकबर बादशाह का बनवाया हुआ एक किला अभी तक बिराजमान है। यहां शनि का पवित्र मदिर है जो बडे ही शात वातावरण में स्थित है। यहाँ प्रत्येक शनिवार को भजन-कीर्तन होता है।

इन पर्वत के दूसरी ओर सूफी मखदूम साहब की पवित्र जियारत है। वह भी काफी ऊँचाई पर है और बहुत सी सीढिया पार कर जियारत तक पहुचने हैं। वहा सगमरमर के दरवाजे और एक बडा पानी का हौज बनाया गया है। यहां प्रत्येक वर्ष एक विशाल उर्स लगता है।

हजरतबल मुसलमानो का परम पवित्र स्थान झील डल के पश्चिमी किनारे पर है। यहाँ पैगम्बर हजरत मुहम्मद के सिर के 'पावन केश' (होली हेयर) हैं, जिनके दर्शन मुसलमान प्रत्येक शुक्रवार को करते हैं। इसके अतिरिक्त जामा मस्जिद, पत्थर मस्जिद और खानियार मे दस्तगीर की जियारत आदि मुस्लमानो के धार्मिक स्थान है। श्रीनगर से बाहर चिरार शरीफ, बाबा ऋषि की दरगाहें भी उल्लेखनीय है।

सिक्खों के भी श्रीनगर मे रैणावारी और अमीराकदल मे गुरुद्वारे हैं। बारहमूला में भी एक बडा गुरुद्वारा है।

आर्यसमाज का मदिर, हनुमान का मदिर, गणपतयार आदि और भी कई हिन्दूओं के मदिर है।

ईसाईयो के भी यहाँ गिरिजाघर मौजूद है।

१ पैंगोटैट चर्च

२. रोमन कैथोलिक चर्च

कश्मीर के उद्योग धंधे और उसकी आर्थिक प्रगति

कश्मीर कला-कौशल का केन्द्र है। यहाँ की दस्तकारी ससार में प्रसिद्ध है, जो अपनी सुकुमारता, सुन्दरता में लाजवाब है। कश्मीर मे कालीन, नमदा, पेपर मशी, लकडी का काम, शाल-दुशाले पोस्तीन और चमडे का काम आदि दस्तकारियाँ बहुत लोकप्रिय और प्रसिद्ध हैं।

कालीन :-

कालीन कश्मीर के मशहूर हैं। कालीन का काम जैनुल आबदीन 'बडशा' (१४२०-१४७०) के राज्यकाल मे शुरू हुआ। उसने समरकद से अच्छे-अच्छे दस्तकार और कारीगर मगाए जिनकी मदद से कालीन नमदा का काम यहा शुरू किया गया। मुगलों के दौर मे इस दस्तकारी को और अधिक उन्नति मिली। डोगरा राज्य मे अग्रेजो ने भी कालीन की दस्तकारी को अच्छा प्रोत्साहन दिया। कालीन के लिए ऊन दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड से आती है, रूई का धागा राजस्थान, अहमदाबाद और दिल्ली से मगवाया जाता है। रग भी बाहर से ही मगाए जाते है।

'आल इंडिया हैण्डीक्राफ्ट बोर्ड' इसकी देखरेख के लिए बनाई गई है कालीन का डिजाइन पहले ग्राफ पेपर पर बना लिया जाता है। अपने डिजाइन में ये कालीन मौडर्न होते जा रहे है। कई हजार रुपये के मूल्य का एक कालीन होता है।

नमदा :—

कश्मीर में नमदासाजी का प्रारम्भ तो अकबर के काल मे ही हो चुका था, उसने घोडों की जीन बनवाने के लिए काबुल से कारीगर मगाए थे लेकिन १९१८ से यह काम अधिक प्रगतिशील हुआ। पहले नमदे पारकद से आया करते थे जो ऊनी होते थे। कश्मीर के नमदे ऊनी कम होते है उनमें रूई अधिक लगी होती है। पहले कश्मीरी नमदों मे ऊन-रूई ३ १ के अनुपात से लगाई जाती थी, आजकल यह मात्रा घट गई है और रूई ८०-९० प्रतिशत लगाई जाती है। नमदों पर नए नए डिजाइन बडे सुन्दर लगते है। नमदे के साथ गब्बे भी यहाँ सुन्दर मिलते है। गब्बा पुराने कम्बल पर कशीदा निकाल कर तैयार किया जाता है। यह भी नमदे की भाँति कमरे मे बिछाने के काम आता है। अनत नाग मे गब्बे अच्छे तैयार होते है।

शाल :—

कश्मीर के शाल-दुशाले अपनी सुन्दरता मे बेजोड है, उनका कोई मुकाबला नही। शाल दुशाले दो प्रकार के है' कानी' और 'अमली'। कानी शाल तो अब दुर्लभ हो गए है, आजकल असली शाल दुशाले ज्यादा चलते है। अमली शाल पशमीने के कपडे पर कशीदाकारी द्वारा तैयार किए जाते है। ये ३० रु० से लेकर ४.५ हजार रु० की कीमत के होते है। पशमीना एक खास तरह की ऊन होती है जो लद्दाख जैसे ऊँचे प्रदेशो से

मगाई जाती है। पशमीन की कोमलता, चमक, उसकी नफासत के सामने रेशम भी कुछ नहीं। प्राचीन समय तो एक पशमीने का थान अगूठी से निकाल दिया जाता था।

लोई और कम्बल:—

घरेलू इस्तेमाल के लिए लोइयाँ बहुत प्रचलित हैं। घरेलू दस्तकारी से लोइयाँ बहुत तैयार होती है, कोपरेटिव आधार पर भी इस दस्तकारी ने उन्नती की है। बाण्डी पुर, अन्नत नाग, शोपियाँ की लोइया प्रसिद्ध हैं। कम्बल किश्तवाड और भद्रवार में अच्छे बनते है।

पेपरमाशी:—

कागज या पुराने कपडे की लुगदी तैयार करके उसे साचे में ढालकर सजावट की अनेक वस्तुएँ बनाई जाती हैं। यह दस्तकारी ५०० साल से अधिक पुरानी है और समरकद से आई है। समरकद मे इस दस्तकारी का नाम 'कारकलम्दानी' है। बडशा ने मध्य एशिया से यहाँ कारीगर बुलाये और यह काम शुरू कराया। पहले तो छतों मे भी पेपरमाशी का काम होता था। आजकल सिगरेट केस, लैम्प, फूलदान, छोटे-छोटे बक्स, कलमदान, शेड लैम्प आदि कई चीजें पेपरमाशी की बनाई जाती हैं जो अपने डिजाइन में दिलकश है। हर साल १० लाख रु० का माल तैयार होता है।

लकड़ी का काम—

कश्मीर में लकडी का काम (वुड कार्विंग) भी बहुत सुन्दर होता है। अखरोट की लकडी पर नक्काशी करके, उभार और कटाव का काम करके सिगार बक्स, डिब्बे, सिगरेट केस, लैम्प अदि सजावट की चीजें

तयार की जाती है। पेपरमाशी की तरह सैयाह लोग यह लकडी की चीजे भी खरीदते है। हर वर्ष २२ लाख का माल यहाँ तैयार होता है।

सोने-चांदी का काम—

यहाँ सोने, चांदी, तावे की चीजें बनाई जाती है और उन पर नक्काशी की जाती है। चांदी के टी सेट, प्याले, सुराही लोहे, जेवर यहाँ काफी बनाए जाते है। तावे के समावार, थालियाँ अच्छी तैयार होती है।

पोस्तीन का काम—

कश्मीर मे जानवरों की वालदार खाल से टोपी, दस्ताने, कोट, वटवे आदि वनाए जाते है। यह खाल विल्ली, लोमडी, चीते, खरगोश आदि की होती है। श्रीनगर मे इसका वडा व्यापार होता है।

बेंत की टोकरियां बनाने का काम—

बेंत की लकडी से भी यहाँ टोकरियाँ, कुर्सिया, मेज आदि चीजें बनाई जाती है, ये सुन्दर और मजबूत होती है। यात्री लोग श्रीनगर से टोकरियाँ आदि खूब खरीद कर ले जाते है।

रेशमी कपडें—

रेशम का कपडा भी कश्मीर में काफी तैयार किया जाता है। श्रीनगर में कई रेशमी कपडे के कारखाने है। रेशमी कपडे से साडी अधिक वनाई जाती है। रेशमी साडियाँ जिन पर कशीदाकारी की गई होती है खूब बिकती है। यहाँ का रेशमी कपडा। देश के दूसरे प्रदेशों के अतिरिक्त वाहर के देशोमें भी भेजा जाता है।

कारखानें—

कश्मीर में कई एक वडे कारखाने है जहाँ हजारों मनुष्यों को रोजगार मिला है और लाखों रुपए का उत्पादन प्रति वर्ष किया जाता है।

गवर्नमेंट सिल्क फैक्टरी

यह फैक्टरी श्रीनगर मे रामबाग के पास है। यहाँ का रेशम बाहर जाता है, इसका प्रबन्ध सरकार के हाथ में है।

गवर्नमेंट सिल्क वीविंग फैक्टरी—

यह राजबाग, श्रीनगर मे है। यहा नई मशीने लगी हैं और सुन्दर रेशमी कपडा, साडियाँ तैयार होती है। इसके अतिरिक्त 'आर्टेन्स सिल्क वीविंग फैक्टरी' मे रशम के बुनने और रगने का काम होता है। रेशम के कारखाने कश्मीर में और भी कई एक है।

गवर्नमेंट वूलन मिल्ज—

यह गर्म कपडे का कारखाना श्रीनगर में है यहाँ ऊनी कपडा बहुत तैयार होता है। कम्बल काफी मात्रा में मिलते है। शाल, गर्म चादर, दुस्सा, टुविड यहाँ हर समय मिलते है।

यहाँ श्रीगाँधी आश्रम खादी भण्डार का बडा कारखाना है यहाँ पट्टू और लोइयाँ अधिक मिलती है। सूती खादी कपडा भी यहाँ काफी मात्रा में प्राप्त होता है।

गवर्नमेंट आर्ट्स एम्पोरियम मे कश्मीर की शाल, साडियाँ और दूसरी सुन्दर वस्तुए मिलती है। यह टूरिस्ट सेंटर के निकट है।

कश्मीर की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार हुआ है। यहाँ लोगो के रहन-सहन में भी परिवर्तन हो गया है। कश्मीर से मेवे, रेशमी कपडे, लकडी-पेपरमाशी का सामान, इमारती लकडी, शाल-दुशाले, नमदे, लोई, पट्टू पशमीना, फर के दस्ताने-कोट और सजावट की बहुत सी चीजें जाती है। भारत सरकार यहा जल्दी ही एच. एम. टी का घडी बनाने का कारखाना शुरू करने वाली है।

◆◆◆

कश्मीर में शिक्षा की प्रगति

भारत में कश्मीर ही एकमात्र ऐसा प्रदेश है वहा एम ए तक मुफ्त शिक्षा दी जाती है। इससे यहा के पिछड और गरीब आदमियों को शिक्षा प्राप्त करने तथा उन्नति करने के सुन्दर अवसर प्राप्त हुए। इस समय कश्मीर में सैकडों हाइ स्कूल है जो अधिकाँश सरकार द्वारा चलाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त कालेजो की सख्या भी यहा काफी है। बारहमूला, सोपोर, अनतनाग और श्रीनगर म डिग्री कालेज शिक्षा के प्रसार मे अधिक योग दे रहे है श्रीनगर मे श्रीप्रताप कालेज, अमरसिंह कालेज, इस्लामिया कालेज, गाँधी कालेज, डी ए वी कालेज (रैनावारी) है। महिलाओ के लिए गवर्नमेट (अमीरा कदल), गवर्नमेट वीमेन कालेज (नवाकदल) है, जहा केवल लडकियों को ही शिक्षा दी जाती है। डिग्री कक्षाओं तक यहाँ सहशिक्षा (को-एजुकेशन) की प्रथा को प्रोत्साहन नहीं दिया गया। इन कालेजों मे आर्ट्स, साईंस और कामर्स के विषय पढाए जाते है। कामर्स के लिए तो यहाँ सिर्फ इस्लामिया कालेज, श्रीनगर में है।

प्रत्येक प्रकार की

अंग्रेजी शराब, जिन ब्राँडी, रम, बियर और फलो के रस।

रैना हाऊस

थोक व प्रचून विक्रेता, अमीरा कदल, लाल चौक

श्रीनगर (काश्मीर)

ब्लैक नाईट, हाईलैड चीफ, सोलन न० १, हावर्ड, वाट ६९, स्कॉच, जॉनी वाकर, ओल्ड टेंवर्न, गोल्डन ईगल, बियर, थ्री ऐक्स रम।

बी० एड० की कक्षाए गाँधी कालेज और टीचर्स ट्रेनिग कालेज मे लगती है। डाक्टरी को लिए गवर्नमेट मेडिकल कालेज श्रीनगर में बहुत अच्छा है, जो स्टेट हॉस्पिटल के साथ लगा हुआ है। इजीनियरिंग की शिक्षा के लिए भी रेजीनल इजीनियरिग कालेज नसीम बाग, श्रीनगर मे है। इसके साथ यहाँ कश्मीर विश्वविद्यालय में पोस्ट ग्रेजुएट की शिक्षा लगभग सभी विषयो मे दी जाती है। यहा हिन्दी, उर्दू, इगलिश, फिजिक्स, मैथ्स आदि मे रिसर्च करने की सुविधाए भी प्राप्य है। यूनीवर्सिटी की भव्य लायब्रेरी है।

लालमण्डी बड पर पब्लिक लायब्रेरी और रिसर्च लायब्रेरी है. यहाँ पुराने मैनिसक्रिप्ट्स भी सुरक्षित है। सस्कृत की पुरानी पुस्तकें यहा शोधकार्य के लिए अधिक उपयोगी है।

कल्चर अकादमी भी शिक्षा के क्षेत्र मे काफी सहायता पहुचाती है। यहाँ लेखको को कुछ सहायतार्थ धन दिया जाता है जिससे वे अपनी रचनाएँ प्रकाशित करा सकते हैं ('शीराजा' नाम की पत्रिका यहा से हिन्दी-उर्दू दोनो भाषाओ मे निकलती है)।

कश्मीर ने शिक्षा के क्षेत्र मे बहुत अधिक उन्नति की है। आयुर्वेदिक या यूनानी कालेज भी यहाँ कार्य करता है। सरकार की ओर से आयुर्वेदिक पद्धति को प्रोत्साहन दिया जाता है।

कश्मीर मे ड्रामा और सगीत की भी उन्नति के लिए कई स्वतन्त्र क्लब है। साहित्य अकादमी (जम्मू व कश्मीर) भी अच्छे ड्रामों को प्रति वर्ष पुरस्कार देती है।

मुद्रक —वैंगार्ड प्रेस, ३०१५ मस्जिद खजूर, धर्मपुरा, दिल्ली-६